बुज़ुर्गाने दीन के अख़्लाक़ और इर्शादात पर मुश्तमिल तालीफ़

अख़्लाक़ुस्सालिहीन

Akhlakussalihin (Hindi)

رحمۃ اللہ تعالی علیہ

मुसन्नीफ़ : हज़रते अल्लामा मौलाना अबू यूसुफ़ शरीफ़ कोटलवी

• इत्तिबाए क़ुरआनो सुन्नत • ईसार अलन्नफ़्स • तर्के निफ़ाक़

• क़िल्लते ज़हक • कसरते ख़ौफ़ • हुक़ूक़ुल इबाद

पेशकश : मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए तख़रीज

मक-त-बतुल मदीना ® ®

مکتبۃ المدینہ

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79- 25391168 E:mail: maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net

बुज़ुर्गाने दीन के
अख़्लाक़ और इर्शादात पर मुश्तमिल तालीफ़

अख़्लाक़ुस्सालिहीन

: मुसन्निफ़ :
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू यूसुफ़ शरीफ़
(कोटल्वी) رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

: पेशकश :
मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या
(शो'बए तख़रीज, दा'वते इस्लामी)

: नाशिर :
मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی الک واصحابک یاحبیب اللہ

नाम किताब : अख़्लाकुस्सालिहीन

पेशकश : मजलिसे अल मदी–नतुल इल्मिय्या

(शो'बए तख़्रीज, दा'वते इस्लामी)

सिने त़बाअ़त : रजबुल मुरज्जब सिने 1430 हिजरी

नाशिर : मक–त–बतुल मदीना अह़मदआबाद

मक–त–बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : 19,20, मुह़म्मदअली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महेल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मुह़म्मद अ़ली सराय रोड (C/0) जामिअ़तुल मदीना,कमाल शााह बाबा दरगाह के पास मोमिनपुरा नागपुर फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385

हुबली : A.J. मुधल कोम्पलेक्स, A.J. मुधल रोड,ब्रीज के पास, हुबली – 580024.

E.mail:ilmia26@yahoo.com

: तम्बीह :

किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ، اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

''अख़्लाकुलस्सासिहीन'' के 13 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 13 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ

मुस्लमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है

(अल मो'जमुल कबीर लित्तबरानी, अल ह़दीस : 5942, जि.6, स.185)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। (2) जितनी अच्छी निय्यतें जियादा, उतना सवाब भी जियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिया से आगाज़ करूंगा। (इस स-फ़ह़ा पर उपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ाअ़ला करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बावुज़ू और (7)क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा (8) क़ुरआनी आयात और (9) अह़ादिसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा (10) जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (12) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) ''याददाश्त'' वाले सफ़ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखुंगा। (13) किताबत वग़ैरा में शरई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़िद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۙ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ

अल मदी-नतुल इल्मिय्या

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार*** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** भी है जो ***दा'वते इस्लामी*** के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(2) शो'बए दर्सी कुतुब

(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब

(4) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब

(5) शो'बए तराजिमे कुतुब

(6) शो'बए तख़्रीज

“**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**” की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल्ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “**दा'वते इस्लामी**” की तमाम मजालिस ब शुमूल “**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

र-मज़ानुल मुबारक सिने 1425 हिजरी

: पेश लफ़्ज़ :

फ़क़ीहे आ'ज़म मौलाना अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ कोटल्वी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मुख़्तसर तालिफ़ "अख़्लाकु़स्सालिह़ीन" आप के हाथों में है, जिन में बुजु़र्गा़ने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के अक़्वाल व अफ़्आल को मौसूफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बिल इख़्तिसार और जामेअ़ तौ़र पर यकजा कर दिया है। बुजु़र्गा़ने दीन की ह़याते मुबारका में हमारे लिये दर्से वह़दानिय्यत के बेशुमार म–दनी फूल हैं, लिहाज़ा हमें इन नुफू़से कु़दसिया के इर्शादात पर अ़मल पैरा हो कर अपने अख़्लाक़ व आ़दाब संवारने की कोशिश करनी चाहिये और इन बुजु़र्गों के नक़्शे क़दम पर चलते हुए रिज़ाए इलाही के हु़सूल में मश्गू़ल हो जाना चाहिये। इसी ग़रज़ से मुअल्लिफ़ ने येह किताब तरतीब दी है, चुनान्चे खु़द ही फ़रमाते हैं :

"मैं ने ब हुक्मे "اَلدِّيْنُ النَّصِيْحَةُ" अपने दीनी भाइयों की हिदायत के लिये इरादा किया कि सालिह़ीन رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیھم का अमल दर आमद, उन का त़रीक़ा, उन के अख़्लाक़ लिखूं ताकि सच्चे मुसल्मानों का त़रीक़ा पेशे नज़र रहे और हम कोशिश करें कि ह़क़ سبحانہ و تعالٰی इन बुजु़र्गा़ने दीन رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیھم के क़दम ब क़दम चलने की तौफ़ि‍क दे और हमारी आ़दात, हमारे अख़्लाक़, हमारा तमद्दुन बिऐनिही वोह हो जो उन ह़ज़रात का था और जिस शख़्स को हम उन के बर ख़िलाफ़ देखें, वोह कैसा ही लेक्चरर, कैसा ही लीडर हो, उस की सोह़बत को हम क़ातिल समझेंगे।"

मजलिसे अल मदी–नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) इस किताब को भी नये अन्दाज़ से ज़ैल में दर्ज उमूर के साथ शाएअ़ कर रही है।

(1) किताब की नई कम्पोज़िंग, जिस में रमूज़ अवक़ाफ़ का भी ख़याल रखने की कोशिश की गई है।

(2) एह्तियात् के साथ प्रुफ़ रीडिंग और असल किताब से मुक़ाबला।

(3) ह्वाला जात की ह्त्तल मक्दूर तख़्रीज

(4) अ़रबी व फ़ारसी इ़बारात की ततबीक़ व तसह्हीह

(5) पैरा बन्दी

(6) आयाते कुरआनी में मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का तरजमा बर क़रार रखा गया है अलबत्ता जहां तरजमा नहीं लिखा था वहां कन्जुल ईमान से तरजमा लिख दिया गया है और आख़िर में मा'ख़ज़ व मराजेअ़ की फेहरिस्त भी शामिल की गई है।

इस किताब को ह्त्तल मक्दूर अह्सन अन्दाज़ में पेश करने के लिये दर्जे बाला उमूर को सर अन्ज़ाम देने में अल मदी-नतुल इल्मिय्या के उ़-लमा ने जो मेह्नत व कोशिश की है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इसे क़बूल फ़रमाए और उन्हें बेहतरीन जज़ा अ़ता फ़रमाए, उन के इ़ल्मो अ़मल में ब-र-कतें दे और दा'वते इस्लामी की मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या और दिगर तमाम मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़ता फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

क़ुछ मुसन्निफ़ के बारे में

फ़क़ीहे आ'ज़म मौलाना अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ قدس سرہ (कोटली, लोहारां, ज़ियाकोट (सियालकोट))

ह़न्फ़ियत व सुन्नियत के बत़ल व जलील मौलाना मुह़म्मद शरीफ़ इब्ने मौलाना अ़ब्दुर्रह़मान। कोटली लोहारां ज़िल्अ़ा सियालकोट (ज़ियाकोट) में पैदा हुए। उ़लूमे दीनिया की तकमील वालिदे माजिद से की। उन के विसाल के बा'द बर-सग़ीर पाक व हिन्द के मुमताज़ उ़-लमा से कस्बे फ़ैज़ किया। ह़ज़रत ख़्वाजा ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुल करीम नक्शबंदी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ के दस्ते ह़क़ परस्त पर बैअ़त हुए और ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हुए। आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیہِ رَحمَۃُ الرَّحمٰن से भी इजाज़त व ख़िलाफ़त ह़ासिल थी। फ़क़ीहे आ'ज़म का लक़ब आप ही ने अ़त़ा फ़रमाया था। ह़ज़रत फ़क़ीहे आ'ज़म رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने फ़िक़्हे ह़नफ़ी की बे बहा ख़िदमात अन्जाम दी हैं। हफ़्त रोज़ा ''अहले ह़दीस'' अमृतसर में आए दिन अहले सुन्नत अह़नाफ़ के ख़िलाफ़ मज़ामीन शाएअ़ होते रहते थे। ह़ज़रत फ़क़ीहे आ'ज़म رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ की कोशिशों से अमृतसर ही से ''अल-फ़ीक़्ह'' के नाम से हफ़्त रोज़ा जारी हुआ जिस में इन ए'तिराज़ात के जवाबात निहायत तह़क़ीक़ व मतानत से दिये जाते थे। इस जरीदे के इ़लावा दीगर जराइद में भी आप के मज़ामीन शाएअ़ होते रहे हैं। आप आ़लिमे शरीअ़त और शैख़े त़रीक़त होने के साथ साथ मक़बूल तरीन मुक़र्रीर भी थे। वा'ज़ व इर्शाद में अपना एक मख़्सूस उस्लूब रख़ते थे।

ह़ज़रत फ़क़ीहे आ'ज़म رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने पंजाब के अत़राफ व

अकनाफ़ के इ़लावा कलकत्ता और मुम्बई वग़ैरा मक़ामात तक सुन्नियत व ह़न्फ़ियत का पैग़ाम पहुंचाया। ओल इन्डिया सुन्नी कान्फ़रन्स बनारस के तारीख़ी इजलास में शीर्कत फ़रमाई और तह़रीके पाकिस्तान की ह़िमायत में जगह जगह तक़रीरें कीं और मुसलमानों को मुस्लिम लीग की ह़िमायत व मुआ़वनत पर तय्यार किया।

आप ने तसनीफ़ व तालीफ़ की तरफ़ भी तवज्जोह फ़रमाई, चन्द तसानीफ़ येह हैं :

(1) ताईदुल इमाम (ह़ाफ़िज़ अबू बक्र इब्ने अबी शैबा की तालीफ़ अर्रद्दु अ़ला अबी ह़नीफ़ा का मुह़क़्क़ीक़ाना रद्द)

(2) नमाज़े ह़–नफ़ी मुदल्लल

(3) सदाक़तुल अह़नाफ़

(4) किताबुत्तरावीह़

(5) ज़रूरते फ़िक़्ह

(6) कश्फ़ूलग़ता

(7) अरबईने नबविय्या

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने 90 साल की उ़म्र में 15 जनवरी 1951 इ़. में दाइए अजल को लब्बैक कहा। दौरे वाली मस्जिद कोटली लोहारां ज़िल्अ़ सियालकोट (ज़ियाकोट) में आप का मज़ारे पुर अन्वार है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उनके स–दक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم

पहली नज़र

इस दौरे पुर फ़ितन में बद अमनी व बेचैनी की पूरे आ़लम पर तसल्त़ है और इन्सान अपनी बद आ़मालियों के बाइस इन्तिहाई कुर्ब व परिशानी की गरिफ़्त में आ चुका है। इस मुसीबत की बड़ी और ह़क़ीक़ी वजह ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का फ़ुक़्दान और इत्तिबाए रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रू गरदानी है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द नबी तो कोई पैदा नहीं हो सकता, हां औलियाए किराम رحمۃ اللّٰہ تعالٰی علیہم का सिल्सिला जारी है और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में ऐसे ऐसे नुफ़ूसे क़ुदसिया पैदा हुए जिन का वुजूद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कामिल इत्तिबाअ़ की ब दौलत हम जैसे बद अ़मलों के लिये मशअ़ले राह है। इन अल्लाह वालों के अख़्लाक़ और उन की सिरत का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना और इसे अपनाना मुसल्मानों के दीनो दुन्या को संवारने के लिये एक कामियाब इ़लाज है। इन अल्लाह वालों ने अपनी जिन्दगीयां किस रंग में गुज़ारी, उन के दिन रात कैसे बसर होते रहे, इन का एक एक लम्ह़ा किस त़रह़ गुज़रता रहा, इन बातों का जवाब दिल के कानों से सुना जाए और फिर उसे अपना दस्तूरुल अ़मल बना लिया जाए तो यक़ीनन हमारी येह जुम्ला परिशानियां दूर हो सकती हैं और रन्जो मसाइब में घिरी हुई दुन्या ह़क़ीक़ी मुसर्रतों और सच्ची ख़ुशियों से फिर आशना हो सकती है।

हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इ़बाद ऐसी चीज़ें हैं जिन का ख़याल रखना इन्सान के लिये बहर ह़ाल ज़रूरी है और इन में से किसी एक से भी

ग़फ़्लत बरतना दीनो दुन्या के नुक़्सान का मूजिब है। मगर अफ़्सोस कि आज कल हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इ़बाद दोनों ही से ग़फ़्लत बरती जा रही है। जिस का भयानक नतीजा सब के सामने है कि अम्न व चैन इ़न्क़ा है और बद अमनी व बे चैनी आ़म है। औलियाए किराम رحمۃ اللہ تعالٰی علیھم हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इ़बाद की अदाएगी में हर वक़्त सर गर्म रहते थे और उन की मुबारक ज़िन्दगियों में एक लम्ह़ा भी ऐसा नहीं नज़र आता जो उन से ग़फ़्लत में गुज़रा हो।

वालिदियुल मुअ़ज़्ज़म फ़क़ीहे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस मौज़ूअ़ पर भी क़लम उठाया और इन अल्लाह वालों के अख़्लाक़ और उन के मुबारक ह़ालात को मुख़्तसर त़ौर पर जम्अ़ फ़रमा कर मुसल्मानों के लिये एक बेहतरीन रूह़ानी तोह़फ़ा तैयार फ़रमा दिया है। मैं दरख़्वास्त करता हूं कि इसे बार बार पढ़िये और पढ़ाइये, सुनिये और सुनाइये। अपने बच्चों को भी समझाइये और इन मुबारक अख़्लाक़ को अपनाइये। ख़ुदा तआ़ला मुझे और आप को इन अल्लाह वालों के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

अबून्नूर मुह़म्मद बशीर (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم

इस ज़माने में जब कि इल्हाद व ज़िन्दिक़ा दिन ब दिन तरक़्क़ी पर है। कुफ़्र व बे दीनी का ज़ोर है, सच्चे मुसल्मान सल्फ़ सालिहीन के मुत्तबेअ़ ख़ाल ख़ाल नज़र आते हैं। कोर बातिनों ने इस्लाम को बाज़िचए इत्फ़ाल बना रखा है, अपने अपने ख़याल से इस्लाम को किसी ने कुछ समझ रखा है किसी ने कुछ, कोई तो मह्ज़ हम दर्दी को इस्लाम समझता है, कोई बे दीनों से मिलजुल कर रहने में इत्तिफ़ाक़ और इसी को ख़ुलासए इस्लाम समझ कर उ-लमाए दीन व मशाइख़े उम्मत पर तफ़रक़ा बाज़ी का इल्ज़ाम लगाता है। कोई दाढ़ी मुंडाने और अंग्रेज़ी टोपी पहनने में इस्लाम की तरक़्क़ी समझता है। कोई मस्तूरात की बे पर्दगी में अपना उ़रूज जानता है। ग़रज़ की मज़हब को दुन्या से नेस्तो नाबूद करने के लिये हमा तन कोशां हैं। मैं ने ब हुक्म ''اَلدِّیۡنُ النَّصِیۡحَۃُ'' (सहीह़ मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबो बयानिद्दीनुन्नसीह़ह, अल ह़दीस:55, स.47) अपने दीनी भाइयों की हिदायत के लिये इरादा किया कि सालिहीन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہم का अ़मल दर आमद, उन का त़रीक़ा, उन के अख़्लाक़ लिखूं ताकि सच्चे मुसल्मानों का त़रीक़ा पेशे नज़र रहे और हम कोशिश करें कि ह़क़ **سبحانہ و تعالٰی** इन बुज़ुर्गाने दीन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہم के क़दम ब क़दम चलने की तौफ़ीक़ दे और हमारी आ़दात, हमारे अख़्लाक़, हमारा तमद्दुन बिएनिही वोह हो जो उन ह़ज़रात का था और जिस शख़्स को हम इस के बर ख़िलाफ़ देखें, वोह कैसा ही लेक्चरर, कैसा ही लीडर हो, उस की सोह़बत को हम क़ातिल समझें।

وَمَا تَوۡفِیۡقِیۡۤ اِلَّا بِاللّٰہِ عَلَیۡہِ تَوَکَّلۡتُ وَ اِلَیۡہِ اُنِیۡبُ

इत्तिबाए क़ुरआनो सुन्नत

सलफ़ सालिह़ीन की येह आ़दते मुबारका थी कि हर अम्र में क़ुरआनो सुन्नत का इत्तिबाअ़ किया करते थे और इस के ख़िलाफ़ को इल्ह़ाद व ज़िन्दिक़ा समझते थे। चुनान्चे इमाम शअ़रानी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ''तम्बीहुल मुग़तर्रीन'' में सय्यिदुत्ताइफ़ा जुनैद رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ से नक़्ल करते हैं कि आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं :

کتابنا هذا یعنی القراٰن سید الکتب واجمعها و شریعتنا اوضح الشرائع وادقها وطریقتنا یعنی طریقة اهل التصوف مشیدة بالکتاب والسنة فمن لم یقرأالقراٰن و یحفظ السنة ویفهم معانیهما لا یصح الاقتداء به۔

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, शुरूअ़ह फ़िल मक़्सूद, स.18)

कि हमारी किताब क़ुरआन शरीफ़ सब किताबों की सरदार व जामेअ़ है और हमारी शरीअ़त सब शरीअ़तों से वाज़ेह़ और अदक़ है और अहले तसव्वुफ़ का त़रीक़ा क़ुरआनो सुन्नत के साथ मज़्बूत़ किया गया है। जो शख़्स क़ुरआनो सुन्नत न जानता हो, न उन के मआ़नी समझता हो, उस की इक़्तिदा सह़ीह़ नहीं, या'नी उसे अपना पेश्वा बनाना जाइज़ नहीं।

और आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ अपने अह़बाब से फ़रमाया करते थे : अगर तुम किसी आदमी को हवा में चार ज़ानू बैठा देखो तो उस का इत्तिबाअ़ न करो ता वक़्त येह कि अम्र व नह्य में उस की जांच न कर लो। अगर उसे देखो कि वोह अम्रे इलाही पर कारबन्द और नवाही से परहेज़ करता है, तो उस को सच्चा जानो और उस की इत्तिबाअ़ करो। अगर ऐसा न हो तो उस से परहेज़ रखो। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, शुरूअ़ फ़िल मक़्सूद, स.18)

इमाम शअ़रानी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं कि एक ऐसा शख़्स

मेरे पास आया जिस के साथ उस के मो'तक़िदीन की एक जमाअ़त थी, वोह शख़्स बे इ़ल्म था। उस को फ़ना व बक़ा में कोई ज़ौक़ हासिल न था। मेरे पास चन्द रोज़ ठहरा। मैं ने उसे एक दिन पूछा कि वुज़ू और नमाज़ की शर्तें बताओ क्या हैं ? कहने लगा : मैं ने इ़ल्म हासिल नहीं किया। मैं ने कहा : भाई क़ुरआनो सुन्नत के ज़ाहिर पर इ़बादात का सहीह़ करना लाजिम है जो शख़्स वाजिब और मुस्तह़ब, ह़राम और मकरूह में फ़र्क़ नहीं जानता वोह तो जाहिल है और जाहिल की इक़्तिदा न ज़ाहिर में दुरुस्त है न बातिन में। उस ने इस का कोई जवाब न दिया और चला गया। अल्लाह तआ़ला ने मुझे उस के शर्र से बचा लिया। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, शुरूआ़ फ़िल मक़्सूद, स.19, मुलख़्ख़सन)

मा'लूम हुवा जो लोग तसव्वुफ़ को क़ुरआनो सुन्नत के ख़िलाफ़ समझते हैं, वोह सख़्त ग़लती पर हैं। बल्कि तसव्वुफ़ में इत्तिबाए़ क़ुरआनो सुन्नत निहायत ज़रूरी अम्र है। क्यूंकि क़ौम की इस्तिलाह़ में सूफ़ी वोही शख़्स है जो आ़लिम हो कर इख़्लास के साथ अपने इ़ल्म पर अ़मल करे। हां ह़ज़राते मशाइख़े किराम رحمۃ اللہ تعالٰی علیہم अपने इरादत मन्दों को मुजाहदात व रियाज़ात की हिदायत करते हैं जो ऐन इत्तिबाए़ शरीअ़त है। मुतक़द्दिमीन में ऐसे लोग भी थे कि जब किसी अम्र में उन को कुतुबे शर-इ़य्या में कोई दलील न मिलती थी तो जनाबे रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस जनाब में अपने दिलों के साथ मुतवज्जेह होते और बारगाहे आ़लिय्या में पहुंच कर उस मस्अले को दरयाफ़्त कर लिया करते थे और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के इर्शाद पर अ़मल कर लिया करते थे। इमाम शअ़रानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि انّ مثل ذلك خاصٌ باكابر الرجال

कि येह बात अकाबिर के लिये ख़ास है। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, शुरूआ़, फ़िल मक़्सूद, स.20, मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं कि

اتبع طرق الهدى ولا يضرك قلة السالكين و اياك و طرق الضلالة و لا تغتر بكثرة السالكين۔

(नुज़्हतुन्नाज़िरीन लिशैख़ तक़ियुद्दीन अ़ब्दुल मलिक, किताबुल ईमान, बाबुल ए'तिसाम बिल किताबिस्सुन्नह, स.11)

या'नी हिदायत का त़रीक़ा इख़्तियार करो इस पर चलने वाले थोड़े भी हों तो भी मुज़िर्र नहीं और गुमराही के रास्तों से बचो गुमराही पर चलने वाले बहुत हों तो भी मुफ़ीद नहीं।

अबू यज़ीद बिस्त़ामी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं :

لو نظرتم الى رجل اعطى من الكرامات حتى تربع فى الهواء فلا تغتروابه حتى تنظروا كيف تجدونه عند الامر والنهى و حفظ الحدود واداء الشريعة

(नुज़्हतुन्नाज़िरीन लिश्शैख़ नक़िय्युद्दीन अ़ब्दुल मलिक, किताबुल ईमान, बाबुल ए'तिसाम बिल किताब वस्सुन्नह, स.11)

या'नी अगर तुम देखो कि एक शख़्स जिसे यहां तक करामात दी गई हैं कि वोह हवा पर चार ज़ानू बैठे तो उस के धोके में न आओ यहां तक कि देखो कि वोह अल्लाह तआ़ला के अम्र व नह्य व ह़िफ़्ज़े ह़ुदूद और अदाए शरीअ़त में कैसा है।

सय्यिदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़्दादी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं :

الطرق كلها مسدودة الاعلى من اقتفى اثر الرسول و قال من لم يحفظ القراٰن ولم يكتب الحديث لا يقتدى به فى هذا الامر لان علمنا مقيد بالكتاب والسنة

(नुज़्हतुन्नाज़िरीन, लिश्शैख़ तक़ियुद्दीन अ़ब्दुल मलिक, किताबुल ईमान, बाबुल अल ए'तिसाम, बिल किताब वस्सनद, स.11)

कि सब रास्ते बन्द हैं मगर जो शख़्स रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करे और फ़रमाया कि जिस शख़्स ने क़ुरआन याद न किया हो और न ह़दीस लिखी हो उस कि इक़्तिदा इस अम्र में न की जाएगी क्यूंकि हमारा इ़ल्म क़ुरआनो ह़दीस के साथ मुक़य्यद है। अबू सईद ख़राज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जो बातिन ज़ाहिर शरअ़ के ख़िलाफ़ हो वोह बातिल है। (नुज़्हतुन्नाज़िरीन, किताबुल ईमान बाबुल ए'तिसाम बिल किताब व सुन्नह, स.11)

ह़ज़रते सरी सक़ती رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

(الصوفی) هو الذی لا یطفئ نور معرفته نور ورعه ولا یتکلم بباطن فی علم ینقضه علیه ظاهر الکتاب ولا تحمله الکرامات علی هتك محارم اللّٰه تعالٰی.

(वफ़यातिल अअ़यान, ह़र्फ़स्सीन अल मुहमला, अबुल ह़सन सरी बिन मुग़िलस, जि.2, स.299)

कि सूफ़ी वोह शख़्स है जिस की मा'रेफ़त का नूर उस की परहेज़गारी के नूर को न बुझाए या'नी और अम्र पर उस का अ़मल हो और नवाही से बचता हो और कोई बातिन की ऐसी बात न करे जिस को ज़ाहिर क़ुरआन तोड़ता हो और करामात उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की महर्रमात की हतक पर बर अंगेख़्ता न करें। ह़ासिल येह है कि वोह शरीअ़त का सच्चा व पक्का ताबेअ़दार हो।

एक शख़्स जिस की ज़ियारत के लिये दूर दूर से लोग आते थे वोह बड़ा मश्हूर ज़ाहिद था। उस की शोहरत की ख़बर सुन कर ह़ज़रते अबू यज़ीद बुस्त़ामी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने अपने बाज़ अह़बाब को फ़रमाया : بنا حتی ننظر الی هذا الرجل الذی قد شهر نفسه بلولایة कि आओ उस शख़्स को देखे

जिस ने अपने आप को वली मश्हूर कर रखा है। जब आप उस के पास गए और वोह घर से बाहर निकला और मस्जिद में दाख़िल हुवा तो उस ने क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के थूका, ह़ज़रते अबू यज़ीद बुस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه उस का येह फ़े'ल देख कर बिग़ैर मुलाक़ात वापस चले आए और उस को सलाम भी न किया और फ़रमाया :

هذا غير مامون على ادب من آداب رسول الله صلى الله عليه وسلم فكيف ما مونا على مايدعيه

(अर्रिसालतुलक़ुशैरिय्या, बाबो फ़ी ज़िक्र मशायख हाज़त्तरीक़ह, अबू यज़ीद बिन त़ैफ़ूर बिन ईसी अल बुस्त़ामी, स.38)

कि येह शख़्स रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आदाब में से एक अदब का भी अमीन नहीं तो विलायत जिस का येह दा'वा करता है उस का अमीन कैसे हो सकता है।

यहां से मा'लूम हो सकता है कि ह़ज़राते मशाइख़े किराम رحمة الله تعالى عليهم किस क़-दर शरीअ़त के पाबन्द थे। मिश्कात शरीफ़ में है कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को देखा कि उस ने क़िब्ला की त़रफ़ मुंह कर के थूका है तो आप ने फ़रमाया : **''لا يصلى لكم''** कि येह तुम्हारी जमाअ़त न कराए। उस ने फिर जमाअ़त कराने का इरादा किया तो लोगों ने उस को मन्अ़ किया और उस को ख़बर दी कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे पीछे नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ फ़रमाया है। फिर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में येह वाक़िआ़ पेश हुवा तो आप ने फ़रमाया : हां (मैं ने मन्अ़ किया है) **انك قد اذيت الله ورسوله** कि तू ने (क़िब्ले की त़रफ़ थूक कर) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के

रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ईज़ा दी । (अबू दावूद) (मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुस्सलात, बाबुल मसाजिद व मवाज़ेइस्सलात, अल फ़स्लिस्सालिस, अल ह़दीस:747, जि.1, स.156)

यहां से मा'लूम कर लेना चाहिये कि दीन में अदब की किस क़दर ज़रूरत है और सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़िब्ला शरीफ़ की बे अदबी करने के सबब मन्अ़ फ़रमाया कि ''येह शख़्स नमाज़ न पढ़ाए।'' जो शख़्स सर से पाउं तक बे अदब हो, सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़क़ में गुस्ताख़ हो, आइम्मए दीन की बे अदबी करता हो, ह़ज़राते मशाइख़ पर त़रह़ त़रह़ के तमस्ख़ुर करे, ऐसा शख़्स इमाम बनने का शरअ़न ह़क़ रखता है ? हरगिज़ नहीं ।

ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

وبما تقع فی قلبی النکتۃ من نکت القوم ایاما فلا اقبل منہ الابشاھدین عدلین الکتاب والسنۃ

(अर्रिसालतुल क़ुशैरिय्या, बाब फ़ी ज़िक्र मशायख़ हाज़त्तरीक़ह, अबू सुलैमान अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़तिय्यतिद्दारानी, स.41)

कि बसा अवक़ात मेरे दिल में कोई नुक्ता नुक्तों में से वाक़ेअ़ होता है। तो मैं क़बूल नहीं करता जब तक क़ुरआनो ह़दीस दो शाहिद इस के मुस्बत न हों।

ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला की मह़ब्बत की अ़लामात में से है कि जनाबे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़ व अफ़्आ़ल व अवामिर व सुनन में उन की मुताबअ़त की जाए। (अर्रिसालतुल क़ुशैरिय्या, बाब फ़ी ज़िक्र मशायख़ हाज़त्तरीक़ह, अबू फ़ैज़ ज़ुन्नून मिस्री, स.24)

ह़ज़रते बिशर ह़ाफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़लमे रूया में ज़ियारत की। आप ने फ़रमाया :

ऐ बिशर ! هل تدری لم رفعك الله تعالٰی من بین اقرانك कि तू जानता है कि **अल्लाह** तआ़ला ने तेरे हम अ़स्रों पर तुझे क्यूं रिफ़अ़त दी ? मैं ने अ़र्ज़ की के या रसूलल्लाह ! मैं ने नहीं जाना । आप ने फ़रमाया :

باتباعك لسنتی و خدمتك للصالحين ونصيحتك لا خوانك و محبتك لا صحابی واهل بيتی و هو الذی بلغك منازل الابرار۔

(अर्रिसालतु कुशैरिय्या, बाब फ़ी ज़िक्र मशायख़ हाज़त्तरीक़ह, अबू नस्र बिशर बिन अल हारिस अल हाफ़ी, स.31)

मेरी सुन्नत की इत्तिबाअ़ के सबब और सालिहीन की ख़िदमत और बिरादराने इस्लाम को नसीहत करने के सबब और मेरे अस्हाब व अहले बैत की महब्बत के सबब **अल्लाह** तआ़ला ने तुझे पाक लोगों के मरतबे में पहुंचाया । (इला हहिना मन्कूल मिन रिसालतुल कुशैरी)

अब सोचना चाहिये कि येह लोग उ़-लमाए त़रीक़त व मशाइख़े मिल्लत व कुबराए ह़क़ीक़त हैं और येह सब के सब शरीअ़ते मुह़म्मदी की ता'ज़ीम करते हैं और अपने बात़िनी उ़लूम को मिल्लते ह़-नफ़िया व सीरते अह़मदिया के ताबेअ़ रखना लाज़िम समझते हैं तो अब वोह जोहला क़ौम जो शरीअ़त की बिल्कुल पाबन्दी नहीं करते, नमाज़ रोज़ा पर तमस्ख़ुर उड़ाते हैं, दाढ़ियां चट करा के रात दिन भंग और चरस पीते हैं और अपने आप को ख़ुदा रसीदा समझते हैं और कहते हैं कि शरअ़ की और फ़क़ीर की क़दीम से मुख़ालफ़त चली आई है । और कहते हैं कि ज़ाहिरी इ़ल्म के तर्क से वुसूले इलल्लाह ह़ासिल होता है वग़ैरा **ذالك من الخرافات** हरगिज़ हरगिज़ दरजए विलायत को नहीं पहुंच सकते ऐसे लोगों की सोहबत से परहेज़ लाज़िम है । मौलाना रूम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ऐसे लोगों के ह़क़ में फ़रमाया है

ऐ बसा इब्लीस आदम रूए हिस्त — पस बहरे दस्ते नबायद दाद दस्त

और येह भी मा'लूम हो गया कि त़रीक़ए अहलुल्लाह मुत़ाबिके़ शरीअ़त है और जो लोग शरीअ़त के पूरे पूरे ताबे'दार हैं वोही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया और मक़्बूल है। और त़रीक़त इसी शरीअ़त का नाम है लेकिन याद रहे कि औलियाए किराम व मशाइख़े इ़ज़ाम जो किताबो सुन्नत का इत्तिबाअ़ करते थे तो ब तवस्सुते मुज्तहिद करते थे। कोई उन में से जो कि मुज्तहिद न था, ग़ैरे मुक़ल्लिद न हुवा, चुनान्चे दुर्रे मुख़्तार में लिखा है कि ह़ज़रते इब्राहीम अद्हम, ह़ज़रते शफ़ीक़ बल्ख़ी, मा'रूफ़ कर्ख़ी, अबू यज़ीद बुस्त़ामी, ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़, ह़ज़रते दावूद त़ाई, ह़ज़रते अबू ह़ामिदुल्लफ़ाफ़, ख़लफ़ बिन अय्यूब, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुबारक, ह़ज़रते वकीअ़ बिन अल जर्राह़ और ह़ज़रते अबू बक्र वर्राक़ वग़ैरहुम رحمة الله تعالٰی علیهم बहुत से औलियाए किराम ह़ज़रते इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़्हब पर हुए हैं। (दुर्रे मुख़्तार, स.6) (अद्दुर्रुल मुख़्तार, अल मुक़द्दमा, जि.1, स.140)

हम शीरां जहां बस्ता ई सिल्सिला अन्द

रूब अजह़ीला चिसां ब कसीलद ई सिल्सिला रा

इख़्लास

सलफ़ सालिह़ीन की आ़दते मुबारका में इख़्लास था। वोह हर एक अ़मल में इख़्लास को मद्दे नज़र रखते थे और रिया का शाएबा भी उन के दिलों में पैदा नहीं होता था। वोह जानते थे कि कोई अ़मल बजुज़ इख़्लास मक़्बूल नहीं। वोह लोगों में ज़ाहिद आ़बिद बनने के लिये कोई काम नहीं करते थे। उन्हें इस बात की कुछ परवाह न होती थी कि लोग उन्हें अच्छा समझेंगे या बुरा। उन का मक़्सद मह़्ज़ रिज़ाए ह़क़ سبحانه و تعالٰی होता था। सारी दुन्या इन की नज़रो में हेच थी वोह जानते थे कि इख़्लास के साथ अ़मल क़लील भी काफ़ी होता है, मगर इख़्लास के सिवा रात दिन भी

इ़बादत करते रहे तो किसी काम की नहीं। रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जब यमन भेजा तो फ़रमाया : **اخلص دينك يكفك العمل القليل** (अल मुस्तदरक अ़लस्सहीहैन, किताबुर्रक़ाक़, अल ह़दीस:7914, जि.5, स.435)

कि अपने दीन में इख़्लास कर तुझे थोड़ा अ़मल भी काफ़ी होगा। (हाकिम) ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का वाक़िआ़ नाज़िरीन से मख़्फ़ी नहीं कि एक लड़ाई में एक काफ़िर पर आप ने क़ाबू पा लिया। इस ने आप के मुंह मुबारक पर थूंक दिया तो आप ने उसे छोड़ दिया। वोह ह़ैरान रह गया कि येह बात क्या है ? बजाए इस के कि उन्हें ग़ुस्सा आता और मुझे क़त्ल कर देते उन्हों ने छोड़ दिया है। ह़ैरान हो कर पूछता है तो आप फ़रमाते हैं

गुफ़्त मन तैग़ अज़ पए ह़क़ मै ज़नम बन्दए ह़क़ म न मामूर तनम
शेरे ह़क़ म नेस्तम शेरे हवा फ़े'ल मन बर दीन मन बाशुद गवाह

कि मैं ने महज़ रिज़ाए ह़क़ के लिये तल्वार पकड़ी है मैं ख़ुदा के हुक्म का बन्दा हूं अपने नफ़्स के बदले के लिये मामूर नहीं हूं। मैं ख़ुदा का शेर हूं अपनी ख़्वाहिश का शेर नहीं हूं। चूंकि मेरे मुंह पर तू ने थूका है इस लिये अब इस लड़ाई में नफ़्स का दख़ल हो गया इख़्लास जाता रहा, इस लिये मैं ने तुझे छोड़ दिया है कि मेरा काम इख़्लास से ख़ाली न हो

चूंकि दर आदम इ़ल्लते अन्दर ग़िज़ा तैग़ रादीदम निहां कर्दन सज़ा

जब इस जंग में एक इ़ल्लत पैदा हो गई जो इख़्लास के मनाफ़ी थी तो मैं ने तल्वार का रोकना ही मुनासिब समझा। वोह काफ़िर ह़ज़रत का येह जवाब सुन कर मुसल्मान हो गया। इस पर मौलाना रूमी फ़रमाते हैं

बस ख़जस्ता मा 'सिय्यत कां मर्द कर्द ने ज़ख़ारे बर्द मद औराक़े वर्द

वोह थूकना उस के ह़क़ में क्या मुबारक हो गया कि उसे इस्लाम

नसीब हो गया। इस पर मौलाना तम्सील बयान फ़रमाते हैं कि जिस त़रह़ कांटों से गुले सुर्ख़ के पत्ते निकलते हैं इसी त़रह़ उस के गुनाह से उसे इस्लाम ह़ासिल हो गया।

ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाया करते थे :

''من طلب الدنیا بعمل الآخرۃ نکس اللّٰہ قلبہ و کتب اسمہ فی دیوان اھل النار''

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाहि तआ़ला, स.23)

जो शख़्स आख़िरत के अ़मल के साथ दुन्या त़लब करे, ख़ुदा तआ़ला उस के दिल को उल्टा कर देता है और उस का नाम दोज़ख़ियों के दफ़्तर में लिख देता है। ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का ये कौल इस आयत से माख़ूज़ है जो ह़क़ तआ़ला ने फ़रमाया :

مَنۡ كَانَ يُرِيۡدُ حَرۡثَ الدُّنۡيَا نُؤۡتِهٖ مِنۡهَا ۚ وَمَالَهٗ فِى الۡاٰخِرَةِ مِنۡ نَّصِيۡبٍ

कि जो शख़्स (अपने आ'माले सालेह़ में) दुन्या चाहे हम दुन्या से इतना जितना कि उस का मुक़र्रर है दे देते हैं और आख़िरत में उस के लिये कोई ह़िस्सा नहीं।

(पा.25, अश्शूरा:20)

एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मन्क़ूल है कि वोह यहां तक इख़्लास की कोशिश करते थे कि हमेशा जमाअ़त की सफ़े अव्वल में शामिल होते, एक दिन इत्तिफ़ाक़न आख़िरी सफ़ में खड़े हुए और दिल में ख़याल आया कि आज लोग मुझे आख़िरी सफ़ में देख कर क्या कहेंगे। इस ख़याल के सबब लोगों से शर्मिन्दा हो गए या'नी येह ख़याल आया कि पिछली सफ़ में देख कर लोग कहेंगे कि आज इस को क्या हो गया है कि पहली सफ़ में नहीं मिल सका। इस ख़याल के आते ही येह समझा कि मैं ने जितनी नमाज़ें

पहली सफ़ में पढ़ी हैं इस में लोगों के लिये नुमाइश मक़्सूद थी। तो तीस साल की नमाज़ें क़ज़ा कीं।

(कीमियाए सआ़दत, रुक्न चहारुम, अस्ल पन्जुम, जि.2, स.876)

ह़ज़रते मा'रूफ़ कर्ख़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाया करते थे : ''اخلصی تتخلص'' ऐ नफ़्स ! इख़्लास कर ! ताकि तू खलासी पाए। आप ने येह भी फ़रमाया : ''المخلص من یکتم حسناته کما یکتم سیئاته'' मुख़्लिस वोह है जो अपनी नेकियों को भी ऐसे ही छुपाए जैसे कि अपनी बुराइयों को छुपाता है।

ह़ज़रते सुफ़ियान सौरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि मुझे मेरी वालिदा ने फ़रमाया : یٰبنی لا تتعلم العلم الااذانویت العمل به والافهووبال علیك یوم القیٰمة

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाह तआ़ला, स.23)

ऐ मेरे बेटे ! इ़ल्म पर अगर अ़मल की निय्यत हो तो पढ़ो वरना वोह इ़ल्म क़ियामत के दिन तुम पर वबाल होगा।

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ हमेशा अपने नफ़्स को मुख़ातिब कर के फ़रमाया करते थे :

تتکلمین بکلام الصالحین القانتین العابدین وتفعلین فعل الفاسقین المنافقین المرائین واللّٰه ما هذه صفات المخلصین۔

ऐ नफ़्स ! तू बातें तो ऐसी करता है जैसे बड़ा ही कोई सालेह़, आ़बिद, ज़ाहिद है लेकिन तेरे काम रियाकारों, फ़ासिक़ों, मुनाफ़िक़ों के हैं। ख़ुदा की क़सम ! मुख़्लिस लोगों की येह सिफ़ात नहीं कि इन में बातें हों और अ़मल न हो। ख़याल फ़रमाइये, इमाम ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ वोह शख़्स हैं जिन्हों ने उम्मुल मुअमिनीन उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का दूध

पिया। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से ख़िर्क़े ख़िलाफ़त पहना। सिल्सिलए चिश्तिया क़ादिरिय्या और सोहरवर्दिया के शैख़ हुए। मगर नफ़्स को हमेशा ऐसे ही झिड़का करते थे ताकि इस में रिया न पैदा हो। एक हम भी हैं बदनाम कुनिन्दा नेको नामे चन्द कि हम अपनी रियाकारियों को ऐन इख़्लास समझते हैं।

ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि आदमी मुख़्लिस किस वक़्त होता है। फ़रमाया : जब इ़बादते इलाही में ख़ूब कोशिश करे और उस की ख़्वाहिश येह हो कि लोग मेरी इ़ज़्ज़त न करें। जो इ़ज़्ज़त कि लोगों के दिलों में है वोह भी जाती रहे।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाहु तआ़ला, स.23)

ह़ज़रते यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से सुवाल हुवा कि इन्सान कब मुख़्लिस होता है। फ़रमाया : जब शीर ख़्वार बच्चे की त़रह़ उस की आ़दत हो। शीर ख़्वार बच्चे की कोई ता'रीफ़ करे तो उसे ख़ुश नहीं लगती और मज़म्मत करे तो उसे बुरी नहीं मा'लूम होती जिस त़रह़ वोह अपनी मद्ह़ और ज़म से बे परवाह होता है इसी त़रह़ इन्सान जब मद्ह़ व ज़म की परवाह न करे तो मुख़्लिस कहा जा सकता है।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाहु तआ़ला,स.24)

ह़ज़रते अबुस्साइब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ यहां तक इख़्लास का ख़याल रखते थे कि अगर क़ुरआन या ह़दीस के सुनने से उन को रिक़्क़त त़ारी हो जाती और आंखों में पानी भर आता तो आप फ़ौरन उस रोने को तबस्सुम की त़रफ़ फेर देते। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाहु तआ़ला, स.24)

या'नी हंस पड़ते और डरते कि रोने में रिया न हो जाए। आज हम ख़्वाह मख़्वाह वा'ज़ में तक़रीर में रोनी सूरत बनाते हैं कि लोग समझें कि येह ह़ज़रत बड़े नर्म दिल और ख़ुदा ख़ौफ़ हैं।

येह बीं तफ़ावत राह अज़ कुजास्त ता ब कुजा

और अ़ब्दुल्लाह अन्ताकी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन रियाकार को हुक्म होगा कि जिस शख़्स के दिखाने के लिये तू ने अ़मल किया उस का अज्र उसी से मांग।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाहु तआ़ला, स.24)

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :

من ذم نفسه فى الملاء فقد مدحها و ذالك من علامات الرياء

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाहु तआ़ला, स.25)

कि जो शख़्स मजालिस में अपने नफ़्स की मज़म्मत करे तो उस ने गोया मद्ह़ की और येह रिया की अ़लामत से है। यहां से उन वाइ़ज़ों और लेक्चररों को इ़ब्रत ह़ासिल करना चाहिये जो स्टेज पर खड़े होते अपनी मज़म्मत करते हैं कि इन ह़ज़रात के सामने क्या जुर्अत रखता हुं कि बोलु, मैं इन के सामने हेच हुं, येह हुं, वोह हुं। येह मज़म्मत नहीं बल्कि ह़क़ीक़त में अपनी ता'रीफ़ करना है। बुज़ुर्गाने दीन इस को भी रिया पर मह़मूल फ़रमाते थे।

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अद्हम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि किसी भाई को उस के नफ़्ली रोज़ों के मु-तअ़ल्लिक न पूछो कि तेरा रोज़ा है या नही कयुं कि अगर उस ने कहा कि में रोज़दार हुं तो उस का दिल ख़ुश होगा और वोह ख़याल करेगा कि मेरी इ़बादत का इस को पता लग गया है। अगर वोह बोला कि मेरा रोज़ा नहीं तो वोह ग़मनाक होगा और उसे शर्म आएगी कि

मेरा रोज़ा नहीं और उस शख़्स को मेरी निस्बत जो हुस्ने ज़न है जाता रहेगा। येह ख़ुशी और ग़मी दोनों ही अ़लामाते रिया से हैं और इस में इस मस्ऊल को फ़ज़ीह़त है कि सिर्फ़ तुम्हारे पूछने के सबब वोह रिया में मुब्तला हुवा।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाहु तआ़ला, स.26)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स का'बे का त़वाफ़ करता है और वोह ख़ुरासान के लोगों के लिये रिया करता है लोगों ने आप से पूछा कि येह कैसे हो सकता है ?

तो आप ने फ़रमाया कि वोह त़वाफ़ करने वाला इस बात की मह़ब्बत रखता है कि अहले ख़ुरासान मुझे देखें और येह ख़याल करें कि येह शख़्स मक्का शरीफ़ का मुजावर है और हर वक़्त त़वाफ़ व सअ़्य में रहता है बड़ा अच्छा है। जब उस ने येह ख़याल किया तो उस त़वाफ़ में इख़्लास जाता रहा।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासतुहुमुल्लाहु तआ़ला, स.25)

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं :

ادرکنا النّاس وھم یراؤون بما یعملون فصاروا الآن یراؤون بما لا یعملون

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासतुहुमुल्लाहु तआ़ला, स.25)

कि हम ने ऐसे लोगों को पाया कि वोह अ़मलों में रिया करते थे या'नी अ़मल करते थे और इस में रिया होता था लेकिन आज ऐसी ह़ालत हो गई कि लोग रिया करते हैं लेकिन अ़मल नहीं करते या'नी करते कुछ नहीं मह़ज़ रिया ही रिया है। ह़ज़रते इब्राहीम बिन अद्हम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाया करते थे : जो शख़्स इस अम्र की मह़ब्बत रखे कि लोग मेरा ज़िक्रे ख़ैर करें उस ने न इख़्लास किया न तक़्वा।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाहु तआ़ला, स.25)

हज़रते इकरमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि निय्यते सालेह़ ब कसरत किया करो कि निय्यते सालेह़ में रिया की गुन्जाइश नहीं।

(तम्बीहुल मुग़्तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासुहुमुल्लाहु तआला, स.26)

हज़रते अबू दावूद तियालसी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि आ़लिम को लाज़िम है कि जब कोई किताब लिखे उस की निय्यत में दीन की नुस्रत का इरादा हो, येह इरादा न हो कि उ़म्दा तालीफ़ के सबब लोग मुझे अच्छा समझें। अगर येह इरादा करेगा तो इख़्लास जाता रहेगा।

(तम्बीहुल मुग़्तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआला, स.26)

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि रियाकार की तीन अ़लामतें हैं जब अकेला हो तो इबादत में सुस्ती करे और नवाफ़िल बैठ कर पढ़े और जब लोगों में हो तो सुस्ती न करे बल्कि अ़मल ज़ियादा करे और जब लोग उस की मद्ह़ करें तो इबादत ज़ियादा करे, अगर लोग मज़म्मत करें तो छोड़ दे।

(तम्बीहुल मुग़्तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआला, स.27)

हज़रते सुफ़ियान सौरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जो अ़मल मैं ने ज़ाहिर कर दिया है मैं उस को शुमार में नहीं लाता या'नी इस को कालअ़दम समझता हूं क्युंकि लोगों के सामने इख़्लास ह़ासिल होना मुश्किल है। (तम्बीहुल मुग़्तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासतुहुमुल्लाहु तआला, स.27)

हज़रते इब्राहीम तैमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ऐसा लिबास पहनते थे कि उन के अह़बाब के सिवा कोई उन को पहचान नहीं सकता था कि येह आ़लिम हैं और फ़रमाया करते थे कि मुख़्लिस वोह है जो अपनी नेकियों को ऐसा छुपाए जैसे बुराइयों को छुपाता है।

(तम्बीहुल मुग़्तरीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआला, स.27)

ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने ह़ज़रते त़ाऊस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को देखा कि वोह ह़रम शरीफ़ में एक बहुत बड़े ह़ल्क़ए दर्स में ह़दीस का इम्ला फ़रमा रहे थे। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने क़रीब हो कर उन के कान में कहा कि अगर तेरा नफ़्स तुझे उ़जब में डाले या'नी अगर नफ़्स को येह बात पसन्दीदा मा'लूम होती है तो इस मजलिस से उठ खड़ा हो उसी वक़्त ह़ज़रते त़ाऊस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ उठ खड़े हुए।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासतुहुमुल्लाहु तआ़ला, स.27)

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अद्हम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ह़ज़रते बिश्र ह़ाफ़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के ह़ल्क़े में तशरीफ़ ले गए तो आप के ह़ल्क़ए दर्स को देख कर फ़रमाने लगे : अगर येह ह़ल्क़ा किसी सह़ाबी का होता तो मैं अपने नफ़्स पर उ़जब से बे ख़ौफ़ न होता।

(तम्बाहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.27)

ह़ज़रते सुफ़ियान सौरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जब ह़दीस की इम्ला के लिये अकेले बैठते तो निहायत ख़ाइफ़ और मरऊ़ब बैठते। अगर इन के ऊपर से बादल गुज़रता तो ख़ामोश हो जाते और फ़रमाते कि मैं डरता हूं कि इस बादल में पत्थर न हों जो हम पर बरसाए जाएं।

(तम्बाहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.27)

एक शख़्स ह़ज़रते अअ़मश رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ के ह़ल्क़े में हंसा तो आप ने उस को झिड़का और उठा दिया और फ़रमाया कि तू इ़ल्म त़लब करता हुवा हंसता है जिस इ़ल्म की त़लब के लिये अल्लाह तआ़ला ने तुझे मुकल्लफ़ फ़रमाया। फिर आप ने दो माह तक उस के साथ कलाम न किया।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.27)

ह़ज़रते सुफ़ियान बिन ऐना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को कहा गया कि आप क्यूं हमारे साथ बैठ कर ह़दीसें बयान नहीं करते। फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मैं तुम को इस बात का अहल नहीं समझता कि तुम्हें ह़दीसें बयान करूं और अपने नफ़्स को भी अहल नहीं समझता कि तुम मेरे जैसे शख़्स से ह़दीसें सुनो।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.27)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا जब कुरआन की तफ़्सीर करने से फ़ारिग़ होते तो फ़रमाया करते कि इस मजलिस को इस्तिग़फ़ार के साथ ख़त्म करो।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.27)

या'नी मजलिस के ख़त्म पर बहुत इस्तिग़फ़ार करते। ह़ज़रते फुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाया करते थे :

العمل لاجل الناس رياء وترك العمل لاجل الناس شرك و الاخلاص ان يعافيك الله منهما۔

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.31)

कि लोगों के वासिते अ़मल करना रिया है और लोगों के लिये अ़मल छोड़ देना शिर्क है। और इख़्लास येह है कि इन दोनों से अल्लाह तआ़ला मह़फ़ूज़ रखे। न लोगों के दिखाने के लिये अ़मल करे न लोगों के होने के सबब छोड़ें। ह़ज़रते इमाम शअ़रानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं कि तर्के अ़मल बराए मर्द मान येह है कि जहां लोग ता'रीफ़ करने वाले हों वहां तो अ़मल करे और जहां न हों छोड़ दे।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.32)

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने ह़वारियों को फ़रमाया करते थे : जब तुम रोज़े रखो तो सर और दाढ़ी को तेल लगाओ और अपनी ह़ालत ऐसी

रखो कि कोई मा'लूम न कर सके कि येह रोज़ादार है।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.32)

ह़ज़रते इकरमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाया करते थे कि मैं ने कोई शख़्स उस शख़्स से ज़ियादा बे अ़क्ल नहीं देखा जो अपने नफ़्स की बुराई को जानता है फिर वोह चाहता है कि लोग मुझे आ़लिम व सालेह़ समझे। उस की मिसाल ऐसी है कि कोई शख़्स कांटे बोता है और चाहता है कि इस में खजूरों का फल लगे। (तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.32, मुल्तक़त़)

ह़ज़रते अबु उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने एक शख्स को देखा के वोह सज्दे मे रो रहा है फरमाया **هذا لو كان فى بيتك حيث لا يراك الناس**

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, इख़्लासहुमुल्लाहु तआ़ला, स.32, मुल्तक़त़)

या'नी येह अच्छा काम है अगर घर में होता जहां लोग न देखते।

ह़िकायत

ह़ज़रते इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه एह़्याउल उ़लूम में नक़्ल करते हैं कि एक आ़बिद को जो कि अ़रसए दराज़ से इबादते इलाही में मशगूल था लोगों ने कहा कि यहां एक क़ौम है जो एक दरख़्त की परस्तिश करती है। आ़बिद सुन कर ग़ज़ब में आया और उस दरख़्त के काटने पर तैयार हो गया। उस को इब्लीस एक शैख़ की सूरत में मिला और पूछा कि कहां जाता है? आ़बिद ने कहा कि मैं उस दरख़्त को काटने जाता हूं जिस की लोग परस्तिश करते हैं। वोह कहने लगा कि तु फ़क़ीर आदमी है तुझे ऐसी क्या ज़रूरत पेश आ गई कि तू ने अपनी इबादत और ज़िक्र व फ़िक्र को छोड़ा और उस काम में लग पड़ा। आ़बिद बोला कि येह भी मेरी इबादत है।

इब्लीस ने कहा कि मैं तुझे हरगिज़ दरख़्त काटने नहीं दूंगा। इस पर दोनों में लड़ाई शुरूअ़ हो गई। आ़बिद ने शैत़ान को नीचे डाल लिया और सीने पर बैठ गया। इब्लीस ने कहा कि मुझे छोड़ दे मैं तेरे साथ एक बात करना चाहता हू। वोह हट गया तो शैत़ान ने कहा : अल्लाह तआ़ला ने तुम पर इस दरख़्त का काटना फ़र्ज़ नहीं किया और तू ख़ुद उस की पूजा नहीं करता फिर तुझे क्या ज़रूरत है कि इस में दख़्ल देता है। क्या तू नबी है या तुझे ख़ुदा ने हुक्म दिया है ? अगर ख़ुदा को इस दरख़्त का काटना मन्जूर है तो किसी अपने नबी को हुक्म भेज कर कटवा देगा। आ़बिद ने कहा : मैं ज़रूर काटूंगा फिर इन दोनों में जंग शुरूअ़ हो गई आ़बिद उस पर गालिब आ गया। उस को गिरा कर उस के सीने पर बैठ गया।

इब्लीस आ़जिज़ आ गया और उस ने एक और तदबीर सोची और कहा कि मैं एक ऐसी बात बताता हूं जो मेरे और तेरे दरमियान फ़ैसला करने वाली हो और वोह तेरे लिये बहुत बेहतर और नाफ़ेअ़ है। आ़बिद ने कहा : वोह क्या है ? उस ने कहा कि मुझे छोड़ दे तो मैं तुझे बताऊं। उस ने छोड़ दिया तो इब्लीस ने बताया कि तू एक फ़क़ीर आदमी है तेरे पास कोई शै नहीं लोग तेरे नान व नफ़्क़ा का ख़याल रखते हैं, क्या तू नहीं चाहता कि तेरे पास माल हो और तू उस से अपने ख़्वेश व अक़ारीब की ख़बर रखे और ख़ुद भी लोगों से बे परवाह हो कर ज़िन्दगी बसर करे ? उस ने कहा : हां येह बात तो दिल चाहता है। तो इब्लीस ने कहा कि इस दरख़्त के काटने से बाज़ आ जा। मैं हर रोज़ हर रात को तेरे सर के पास दो दीनार रख दिया करूंगा। सवेरे उठ कर ले लिया कर। अपने नफ़्स पर अपने अहलो इ़याल पर और दीगर अक़ारिब व हमसायों पर ख़र्च किया कर तेरे लिये येह काम बहुत मुफ़ीद

और मुसल्मानों के लिये बहुत नाफ़ेअ़ होगा। अगर येह दरख़्त तू काटेगा उस की जगह और दरख़्त लगा लेंगे तो इस में क्या फ़ाएदा होगा ? आ़बिद ने थोड़ा तफ़क्कुर किया और कहा कि शैख़ (इब्लीस) ने सच कहा, मैं कोई नबी नहीं हूं कि इस का क़त्अ़ करना मुझ पर लाज़िम हो और न मुझे ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** ने इस के काटने का अम्र फ़रमाया है कि मैं न काटने से गुनहगार हूंगा और जिस बात का इस शैख़ ने ज़िक्र किया है वोह बेशक मुफ़ीद है। येह सोच कर आ़बिद ने मन्जूर कर लिया और पूरा अ़हद कर के वापस आ गया। रात को सोया सुब्ह़ उठा तो दो दीनार अपने सिरहाने पा कर बहुत ख़ुश हुवा। इसी त़रह़ दूसरे दिन भी दो दीनार मिल गए। फिर तीसरे दिन कुछ न मिला तो आ़बिद को गुस्सा आया और फिर दरख़्त काटने के इरादे से उठ खड़ा हुवा। फिर इब्लीस उसी सूरत में सामने आ गया। और कहने लगा कि अब कहां का इरादा है ? आ़बिद ने कहा कि दरख़्त काटूंगा। उस ने कहा कि मैं हरगिज़ नहीं जाने दूंगा। इसी तकरार में दोनों में कुश्ती हुई। इब्लीस ने आ़बिद को गिरा दिया और सीने पर बैठ गया और कहने लगा कि अगर इस इरादे से बाज़ आ जाए तो बेहतर वरना तुझे ज़ब्ह़ कर डालूंगा। आ़बिद ने मा'लूम किया कि मुझे इस के मुक़ाबले की त़ाक़त नहीं। कहने लगा कि इस की वजह बताओ कि पहले तो मैं ने तुम को पछाड़ लिया था आज तू ग़ालिब आ गया है इस की क्या वजह है ? शैत़ान बोला कि कल तू ख़ालिस ख़ुदा के लिये दरख़्त काटने निकला था तेरी निय्यत में इख़्लास था। लेकिन आज तुझे दो दीनारों के न मिलने का गुस्सा है। आज तेरा इरादा महज़ ख़ुदा के लिये नहीं इस लिये मैं आज तुझ पर ग़ालिब आ गया।

इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि शैत़ान मुख़्लिस बन्दों पर ग़लबा नहीं पा सकता। ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** ने इस की तस्रीह़ फ़रमाई है

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ٥ (पा. 14, अल ह़जर:40)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मगर जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं।

तो मा'लूम हुवा कि बन्दा शैत़ान से इख़्लास के सिवा नहीं बच सकता। इख़्लास हो तो इब्लीस की कोई पेश नहीं जाती। (एह़्याउ़ल उ़लूमिद्दीन, किताबुल निय्यत वल इख़्लास व स्सिद्क़, अल बाबुस्सानी फ़िल इख़्लास व फ़ज़ीलत...अलख़, जि.5, स.104)

الحب فی اللّٰہ والبغض فی اللّٰہ

सलफ़ सालिह़ीन की आ़दाते मुबारका में येह भी था कि वोह जिस शख़्स से मह़ब्बत या दुश्मनी रखते थे, मह़ज़ ख़ुदा के लिये रखते थे दुन्या की कोई ग़-रज़ नहीं होती थी। या'नी किसी दुन्यादार के साथ दुन्या के लिये मह़ब्बत नहीं रखते थे। बल्कि इन का मक़्सूद रिज़ाए ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** होता था। अगर दुन्यादार बा वुजूदे मालदार होने के दीनदार भी हो तो ब वज्हे दीनदारी के उस से मह़ब्बत रखते थे। अगर बे दीन हो तो उसे हिदायत करते थे। और येही कमाले ईमान है। चुनान्चे ह़दीस शरीफ़ में है

''من احب للّٰہ وابغض للّٰہ و اعطی للّٰہ و منع للّٰہ فقد استکمل الایمان''

(सुनने अबी दावूद, किताबुस्सुन्नह, बाबुद्दलील अ़ला ज़ियादतिल ईमान व नुक़्सानिही, अल ह़दीस:4681, जि.4, स.290)

या'नी जिस शख़्स ने किसी के साथ मह़ब्बत की तो मह़ज़ ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये की, अगर बुग़्ज़ रखा तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये, अगर किसी को कुछ दिया तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये, अगर न दिया तो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के लिये, उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया।

अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को वह्य भेजी कि क्या तू ने मेरे लिये भी कोई काम किया। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की के हां मैं ने तेरे लिये नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे, ख़ैरात दी, और भी कुछ आ'माल अ़र्ज़ किये। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : येह आ'माल तो तेरे लिये हैं, क्या तू ने मेरे दोस्त के साथ मेरे लिये मह़ब्बत की और मेरे दुश्मन के साथ मेरे लिये दुश्मनी की।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ग़ैरतहुम ला नतहाकल ह़र्रमात, स.45)

इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये बुग़्ज़ येह अफ़्ज़ल आ'माल में से है। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे : **''مصارمة الفاسق قربة الى الله''**

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ग़ैरतुहुम ला नतहाकल ह़र्रमात, स.46)

कि फ़ासिक़ के साथ क़त़्अ़ (तअ़ल्लुक़) करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करना है।

ह़ज़रते सुफ़ियान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया कि क्या फ़ासिक़ के पास ता'ज़ियत या मातम पुर्सी के लिये जाना दुरुस्त है या नहीं ? तो आप ने फ़रमाया कि दुरुस्त नहीं है।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ग़ैरतहुम ला नतहाकल ह़र्रमात, स.46)

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

من ادعى انه يحب عبدًاللّٰه تعالى ولم يبغضه اذاعصى اللّٰه تعالى فقد كذب فى دعواه انه يحبه لِلّٰه

(तम्बाहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ग़ैरतहुम ला नतहाकल ह़र्रमात, स.46)

या'नी जो शख़्स दा'वा करे कि मैं फ़ुलां शख़्स को ख़ुदा के लिये

दोस्त रखता हूं और वोह शख़्स जब ना फ़रमानी करे और वोह उसे बुरा न समझे तो उस ने महब्बत के दा'वे में झूट कहा कि ख़ुदा के लिये है। इस की महब्बत ख़ुदा के लिये नहीं। अगर ख़ुदा के लिये होती तो उस ने ना फ़रमानी की थी उसे उस ना फ़रमानी के सबब बुरा समझता। अल्लाह तआ़ला के मक़्बूलों को बे दीनों से ऐसी नफ़रत थी। ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه कुत्ते को जब आप के सामने आ कर बैठ जाता तो न हटाते और फ़रमाते ''هو خير من قرين السوء'' (तम्बाहुल मुग़्तरीन, अल बाबुल अव्वल, ग़ैरतहुम ला तन्हाकल ह़ुर्रमात, स.46)

कि बुरे साथी से कुत्ता अच्छा है। ह़ज़रते अह़मद बिन ह़र्ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि नेको से महब्बत और उन के पास बैठना उन की सोह़बत में रहना उन के अफ़्आ़ल व अक़्वाल देख कर अ़मल करना, इन्सानी क़ल्ब के लिये इस से ज़ियादा कोई बात नफ़्अ़ नहीं और बुरों की सोह़बत में रहना फ़ासिक़ों से ख़ल्त़ मल्त़ रखना उन के बुरे काम देख कर बुरा न जानना इस से ज़ियादा क़ल्ब के लिये कोई शै ज़रर रसां नहीं।

(तम्बीहुल मुग़्तरीन, अल बाबुल अव्वल, ग़ैरतहुम ला तन्हाकल ह़ुर्रमात, स.47)

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि अहले मआ़सी के साथ बुग़्ज़ रख कर अल्लाह तआ़ला के साथ महब्बत रखो और उन से दूर रह कर अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ रुजूअ़ करो और उन को बुरा समझने से अल्लाह तआ़ला की रिज़ा ह़ासिल करो। लोगों ने अ़र्ज़ की के ऐ नबिय्यल्लाह! फिर हम किस के पास बैठें ? फ़रमाया : **جالسوا من يذكركم الله رويته** उन लोगों के पास बैठो जिन का देखना तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को याद करवाए और जिन का कलाम तुम्हारे आ'माल में ज़ियादती का बाइ़स हो और उन के आ'माल तुम्हें आख़िरत की त़रफ़ रग़्बत दें।

(नुज़्हतुन्नाज़िरीन, किताबे आदाबिस्सह़ाबा, अल बाबुस्सानी फ़ी फ़ज़्लिल ह़ुब्बु फ़िल्लाह, स.166)

ह़ज़रते सह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से आयत [1]لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰہِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ की तफ़्सीर में आया है कि जिस ने अपना ईमान सह़ीह़ किया और तौह़ीद ख़ालिस की वोह बिदअ़ती के साथ न बैठे न उस के साथ खाए बल्कि अपनी त़रफ़ से उस के ह़क़ में दुश्मनी और बुग़्ज़ ज़ाहिर करे जिस ने बिदअ़ती के साथ मदाहिनत की अल्लाह तआ़ला उस से यक़ीन की लज़्ज़त छीन लेता है। और जिसने बिद्अ़ती को तलाशे इ़ज़्ज़त या तवंगरी के लिये मकबुल रखा अल्लाह तआला उसको इ़ज़्ज़त मे ख्वार करेंगा खौर उसे तवंगरी में मुफ़्लिस कर देगा।

ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिस ने बिदअ़ती की बात सुनी **अल्लाह** तआ़ला उस को इस बात से फ़ाएदा नहीं देता और जो बिद्अ़ती से मुसाफ़ह़ा करता है वोह इस्लाम का ज़ोर तोड़ देता है।

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो बिद्अ़ती को दोस्त रखेगा अल्लाह तआ़ला उस के आ'माल को ह़िब्त़ (बरबाद) कर देता है और उस के दिल से इस्लाम का नूर निकल जाता है। जो शख़्स बिद्अ़ती के साथ बैठता हो उस से भी बचना लाज़िम है। इन्ही से रिवायत है कि अगर किसी रास्ते में बिद्अ़ती आता हो तो दूसरा रास्ता इख़्तियार करो।

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो शख़्स बिद्अ़ती से मिलने गया उस के दिल से नूरे ईमान जाता रहा।

(मजालिसुल अबरार)

---

(1)...لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰہِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہٗ.

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं अल्लाह और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से मुख़ालिफ़त की। (पा. 28,अलमुजादला : 22)

सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन तीनों सह़ाबियों से बोलचाल बन्द कर दी जो एक जंग के पीछे रह गए थे। सह़ाबाए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मुख़ालिफ़ाने शरीअ़त से क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ कर लिया करते थे। सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक ऐसे शख़्स के ह़क़ में फ़रमाया : **لا یصلی لکم** येह तुम्हें नमाज़ न पढ़ाए जिस ने क़िब्ला शरीफ की तरफ मुंह कर के थूका था। आज अगर हम किसी बे अदब फ़िर्के की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ने से मन्अ़ करें तो लोग हमें फ़िर्क़ा अन्दाज़ कहते हैं ह़ालांकि येह तफ़र्रुक़ा नहीं ऐ़न इत्तिबाअ़ है। मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने **فایاکم و ایاھم لایضلونکم ولا یفتنونکم** फ़रमाया। (सह़ीह़ मुस्लिम, अल मुक़द्दमा, बाबुन्नह्य अ़निर्रिवाया अ़निद्दोअ़फ़ा...अलख़, अल ह़दीस:7, स.9)

कि तुम उन से बचो और उन को अपने से अलग रखो वोह तुम्हें गुमराह न कर दें और फ़ित्ने में न डालें।

देखो सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कितनी ताकीद के साथ बे दीनों से बचने की हिदायत फ़रमाई है। तो क्या येह लोग (लीडराने क़ौम) **مَعَاذَاللّٰه** ! रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भी तफ़र्रुक़ा अन्दाज़ी का इत्तिहाम लगाएंगे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो उस शख़्स में राई के बराबर भी ईमान नहीं फ़रमाते हैं जो ऐसे बे दीनों को दिल से भी बुरा न जाने।(मुस्लिम) **وَ اللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم**

ईसार अ़लन्नफ़्स

बुज़ुर्गाने दीन के अख़्लाक़ में से ईसार भी है। वोह अपने नफ़्स पर ग़ैरों को तरजीह़ दिया करते थे, अगर्चे उन को ख़ुद तकलीफ़ हो मगर वोह दूसरों को राह़त पहुंचाने की सअ़्य किया करते थे।

रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में एक अन्सारी एक मेहमान को अपने घर ले गया। उस के घर में सिर्फ़ एक आदमी का खाना

था। उस ने वोह खाना मेहमान के सामने रख दिया और अपनी बीबी को इशारा किया कि वोह चराग़ बुझा दे। उस ने बुझा दिया। मेहमान के साथ वोह अन्सारी आप बैठ गए और मुंह के साथ चप चप करते रहे जिस से मेहमान ने समझा कि आप भी खा रहे हैं वोह सब खाना उसी मेहमान को खिला दिया खुद बमअ़ बीबी और इ़याल भूके सो रहे इस पर येह आयत नाज़िल हुई

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और अपनी जानों पर उन को तरजीह़ देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोह़ताजी हो।

(पा.28, अल ह़श्र:9)

(तफ़्सीरे इब्ने कसीर, जि.8, स.100)

इसी त़रह़ एक बकरी की सिरी एक सह़ाबी के पास स-दक़ा आई तो आप ने फ़रमाया कि फ़ुलां सह़ाबी मुझ से ज़ियादा ग़रीब है उस को दे दो। चुनान्चे उस के पास ले गए। उस ने दूसरे के पास भेज दी। इस दूसरे ने आगे तीसरे के पास यहां तक कि फिरते फिरते फिर पहले के पास आ गई।

(अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम, तफ़्सीरे सूरतुल ह़श्र, क़िस्सए ईसारस्सह़ाबा, अल ह़दीस:3852, जि.3, स.299)

सह़ाबए किराम में तो यहां तक ईसार था कि उन्हों ने अपने भाई मुहाजिरीन को अपनी सब जाएदाद निस्फ़ निस्फ़ तक़्सीम कर दी। बल्कि जिस के पास दो बीवियां थीं उन्हों ने एक को त़लाक़ दे कर अपने भाई मुहाजिर के निकाह़ में दे दी। अल्लाहु अक्बर ! येह उख़ुव्वत व हमदर्दी जिस की नज़ीर आज दुन्या में नज़र नहीं आती।

जंगे यरमूक में एक ज़ख़्मी ने पानी मांगा एख शख़्स पिलाने को

आगे हुवा तो एक दूसरे ज़ख़्मी की आवाज़ आई कि हाए पानी ! ज़ख़्मी ने कहा कि उस भाई को पहले पानी पिला दो । वोह शख़्स आगे ले कर गया तो एक और ने आवाज़ दी कि पानी ! उस ने भी कहा कि उस को पहले पानी पिलाओ । फिर आगे गया तो एक और आवाज़ आई उस ने कहा कि इस को पानी पिलाओ जब वोह उस के पास पहुंचा तो वोह शहीद हो गया था । फिर दूसरे के पास आया तो वोह भी शहीद हो गया था । इसी त़रह़ सब के सब शहीद हो गए । मगर किसी ने पानी न पिया । अपनी जान की परवाह न की सब ने दूसरे भाई के लिये ईसार किया ।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, सूरतुल ह़श्र, तह़तुल आयत:9, जि.8, स.100)

इसी त़रह़ चन्द दरवेश जासूसी की तोहमत में पकड़े गए सरकारी हुक्म हुवा कि उन को क़त्ल किया जाए जब क़त्ल करने लगे तो हर एक ने येही तक़ाज़ा किया कि पहले मुझे क़त्ल किया जाए ताकि एक दो दम ज़िन्दगी के दूसरा भाई ह़ासिल करे और मैं इस से पहले मारा जाऊं । बादशाह ने येह ईसार देखा, सब को रिहा कर दिया ।

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को ।

(पा.29, अद्दहर:8)

की तफ़्सीर में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا और साह़िबज़ादगान का तीन दिन रोज़ा रखना और ब वक़्ते इफ़्त़ार मिस्कीन का सुवाल करना, दूसरे रोज़ किसी यतीम का सुवाल करना, तीसरे रोज़

किसी क़ैदी का और आप का अपनी भूक और अपनी इयाल की भूक की परवाह न करना और साइलीन को दे देना आ'ला दरजे का ईसार है । (तफ़्सीरे कबीर, जि.10, स.746 मुलख़्ख़सन) अल्लाह तआ़ला मुसल्मानों को तौफ़ीक़ दे ।

तर्के निफ़ाक़

सलफ़ सालिहीन की आ़दाते मुबारका में तर्के निफ़ाक़ भी था उन का ज़ाहिर व बातिन अ़मले ख़ैर में मसावा हुवा करता था । उन में से कोई ऐसा अ़मल नहीं करता था जिस के सबब आख़िरत में फ़ज़ीहत हो । ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام उ़मर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ मदीनए मुशर्रफ़ा में जम्अ़ हुए उ़मर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की के आप मुझे कोई नसीह़त फ़रमा दें तो आप ने फ़रमाया :

اياك يا عمران تكون وليا لله فى العلانية وعدو اله فى السر

कि ऐ उ़मर ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस बात से बचना कि तू ज़ाहिर में तो ख़ुदा का दोस्त हो और बातिन में उस का दुश्मन क्यूंकि जिस का ज़ाहिर और बातिन मसावी न हो तो मुनाफ़िक़ होता है और मुनाफ़िक़ों का मक़ाम दर्के अस्फ़ल है । येह सुन कर उ़मर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ यहां तक रोए कि आप की दाढ़ी मुबारक तर हो गई ।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर वल अ़लानिया, स.39)

मुहलिब बिन अबी सफ़रा फ़रमाया करते थे :

انى لاكره الرجل يكون للسانه فضل على فعله (तम्बाहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर वल अ़लानिया, स.40)

कि मैं ऐसे शख़्स को ब नज़रे कराहत देखता हूं जिस की ज़बान को उस के फ़े'ल पर फ़ज़ीलत हो । या'नी उस के अक़्वाल तो अच्छे हों लेकिन अफ़्आ़ल अच्छे न हों ।

अ़ब्दुल वाहि़द बिन ज़ैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे कि इमाम ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जिस मरतबे को पहुंचे इस लिये पहुंचे हैं कि जिस शै का आप ने किसी को हुक्म दिया है , सब से पहले आप ने उस पर अ़मल किया है और जिस शै से किसी को मन्अ़ किया है सब से पहले खुद उस से दूर रहे हैं । फ़रमाते हैं कि हम ने कोई आदमी ह़सन बसरी से ज़ियादा अम्र में नहीं देखा कि उस का ज़ाहिर उस के बाति़न के साथ मुशाबेह हो ।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर्र वल अ़लानिया, स.40)

मुआ़विया बिन कुरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाया करते थे

بكاء القلب خير من بكاء العين

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर्र वल अ़लानिया, स.40)

आंखों के रोने से दिल का रोना बेहतर है। मरवान बिन मुह़म्मद कहते हैं कि जिस आदमी की लोगों ने ता'रीफ़ की, मैं ने उस को उन की ता'रीफ़ से कम पाया मगर वकीअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को, कि उन को मैं ने लोगों की ता'रीफ़ से ज़ियादा पाया ।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर्र वल अ़लानिया, स.40)

अबू अ़ब्दुल्लाह अन्ता़की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बाति़नी गुनाहों को तर्क करना अफ़्ज़लुल आ'माल है उन से उस की वजह पूछी गई तो फ़रमाया कि जिस ने बाति़नी गुनाहों को तर्क किया वोह ज़ाहिरी गुनाहों को ज़ियादा तर्क करने वाला होगा, और फ़रमाया कि जिस का बाति़न उस के ज़ाहिर से अफ़्ज़ल हो वोह खुदा का फ़ज़्ल है और जिस का ज़ाहिर व बाति़न मसावी हो वोह अ़द्ल है और जिस का ज़ाहिर उस के बाति़न से अच्छा हो वोह जुल्म व जोर है।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर्र वल अ़लानिया, स.40)

यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाया करते थे कि अल्लाह तआ़ला ने अम्बिया में से किसी नबी पर वह्य भेजी कि अपनी क़ौम को कह दीजिये कि वोह आ'माल को मेरे लिये पोशीदा करें मैं उन के आ'माल को ज़ाहिर कर दूंगा। (तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर्र वल अ़लानिया, स.40)

या'नी जो शख़्स ख़ुदा के लिये पोशीदा इ़बादत करेगा अल्लाह तआ़ला इस की इ़बादत का चर्चा दुन्या मे करेगा और अहले दुन्या मे वोह आ़बिद मशहूर हो जाएगा। ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि एक बात से बचना कि तू दिन में तो बन्दए सालेह़ बना रहे और रात को शैत़ाने त़ालेह़ हो जाए। (तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर्र वल अ़लानिया)

मुआ़विया बिन क़ुरह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मुझे कोई ऐसा शख़्स बताइये जो रात को रोता है और दिन को हंसता है। (तम्बाहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर्र वल अ़लानिया, स.41) या'नी ऐसे लोग बहुत कम हैं।

अबू अ़ब्दुल्लाह समरक़न्दी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه लोगों को फ़रमाते थे जब कि वोह (लोग) उन की ता'रीफ़ करते थे

والله مامثلی و مثلکم الا کمثل جاریة ذهبت بکارتها بالفجور واهلها لا یعلمون بذلك فهم یفرحون بها لیلةالزفاف وهی حزینة خوف الفضیحة

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मसावातहुम अस्सिर्र वल अ़लानिया, स.41)

ख़ुदा की क़सम ! मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसी है जैसे एक लड़की हो जिस की बकारत ब सबबे बदकारी के ज़ाइल हो गई हो और उस के अहल को मा'लूम न हो तो ज़फ़ाफ़ की रात को उस के अहल तो

ख़ुश होंगे और वोह फ़ज़ीह़त के ख़ौफ़ से ग़मनाक होगी कि आज मेरी करतूत ज़ाहिर हो जाएगी।

ह़ज़रते सुफ़ियान सौरी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं कि इस ज़माने में रिया की कसरत हो गई है। लोग इ़बादत को ज़ाहिर करते हैं और उन का बातिन ह़सद व ह़क़द, बुग़्ज़ व अ़दावत बुख़्ल वग़ैरा में मश्गूल है। अगर तुम्हें इन आ़बिदों के साथ कोई ह़ाजत पेश आए तो किसी ऐसे आ़बिद या आ़लिम को जो इस की मिस्ल हो, सिफ़ारिश के लिये न ले जाना कि वोह उस से नाराज़ होगा। अलबत्ता किसी बड़े दौलतमन्द को सिफ़ारिशी ले जाएगा तो तेरा काम हो जाएगा। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, मसावतहुम अस्सिर्र वल अ़लानिया, स.42, मुलख़्ख़सन)

ह़ासिल येह कि उन लोगों को दुन्यादारों से मह़ब्बत होगी और अपनी इ़बादत नुमूद व रिया के लिये करते होंगे, इस लिये दुन्या दारों का कहना तो मान लेंगे लेकिन अपने से आ़बिदों, ज़ाहिदों से दिली ह़सद और बुग़्ज़ होगा। इस लिये उन का कहना नहीं मानेंगे। अल्लाहु अक्बर ! येह उस ज़माने का ह़ाल है जो ज़मानए नुबुव्वत से बहुत क़रीब था तो अब यहां से क़ियास फ़रमा लीजिये कि आज कल क्या ह़ाल है ह़दीसे सह़ीह़ में आया है कि जो दिन आता है उस के बा'द का दिन उस से बुरातर होता है। अल्लाह तआ़ला ज़माने के ह़वादिस से मह़फ़ूज़ रखे आमीन।

हुक्काम के ज़ुल्म पर सब्र करना

सलफ़ सालिह़ीन की आ़दते मुबारका में से येह भी था कि वोह ह़ाकिमों के ज़ुल्म पर निहायत सब्र करते थे और बड़े इस्तिक़्लाल से उन की

तकालीफ़ को बरदाश्त करते थे और कहते थे कि येह तकालीफ़ हमारे गुनाहों की ब निस्बत बहुत कम हैं । ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाया करते थे कि ह़ज्जाज स–क़फ़ी ख़ुदा की त़रफ़ से एक आज़्माइश था जो बन्दों पर गुनाहों के मुवाफ़िक़ आया । (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरुल हुक्काम, स.42)

सय्यिदुना इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाया करते थे

اذاابتليت بسلطان جائر فخرقت دينك بسببه فرقعه بكثرة : الاستغفارلك وله ايضًا

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरुल हुक्काम, स.42)

कि जब तुझे ज़ालिम बादशाह के साथ इब्तिला वाक़ेअ़ हो जाए और उस के सबब से तेरे दीन में नुक़्सान पैदा हो जाए तो उस नुक़्सान का कसरते इस्तिग़फ़ार के साथ तदारुक कर अपने लिये और उस ज़ालिम बादशाह के लिये ।

हारूनुर्रशीद ने एक शख़्स को बे जा क़ैद किया तो उस शख़्स ने हारूनुर्रशीद की त़रफ़ लिखा ऐ हारून ! जो दिन मेरी क़ैद और तंगी का गुज़रता है इसी की मिस्ल तेरी उ़म्र और ने'मत का दिन भी गुज़र जाता है अम्र क़रीब है और अल्लाह तआ़ला मेरे और आप के दरमियान है जब हारून ने येह रुक़्आ़ पढ़ा उसे रिहा कर दिया उस पर और बहुत एह़सान किया ।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरल हुक्काम, स.43)

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अद्हम رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ के पास लोग कुछ माल ले कर आए और कहा कि बादशाह ने येह माल भेजा है कि आप मोह़ताजों पर तक़्सीम कर दें । आप ने वोह सब माल वापस कर दिया और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब ज़ालिम से ह़िसाब लेगा कि येह माल कैसे

ह़ासिल किया तो वोह कह देगा कि मैं ने इब्राहीम को दे दिया तो मैं ख़्वाह मख़्वाह जवाब देह बन जाऊंगा इस लिये जिस ने येह माल जम्अ़ किया है वोही तक़्सीम करने के लिये औला है। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरुल हुक्काम, स.43, मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं कि तौरेत शरीफ़ में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है कि बादशाहों के दिल मेरे क़ब्ज़े में हैं जो मेरी इत़ाअ़त करेगा मैं उस के लिये बादशाहों को रह़मत बनाऊंगा और जो मेरी मुख़ालफ़त करेगा उस के लिये उन को अ़ज़ाब बनाऊंगा फिर तुम बादशाहों को बुरा कहने में मश्गूल न हो बल्कि मेरी दरगाह में तौबा करो मैं उन को तुम पर महरबान कर दूंगा।(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरुल हुक्काम, स.43)

मैं कहता हूं ह़दीस शरीफ़ में भी येह मज़मून आया है। मिश्कात शरीफ़ के सफ़ह़ा 315 मे अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, फ़रमाया रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कि ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** इर्शाद फ़रमाता है :

"انا اللّٰه لا اله الا انا مالك الملوك وملك الملوك قلوب الملوك فى يدى وان العباد اذا اطاعونى حولت قلوب ملوكهم عليهم بالرحمة والرافة وان العباد اذا عصونى حولت قلوبهم بالسخطة والنقمة فساموهم سوء العذاب فلا تشغلوا انفسكم بالدعاء على الملوك ولكن اشغلوا انفسكم بالذكر والتضرع كى اكفيكم ملوككم "
رواه ابو نعيم فى الحلية

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल अमारह वल क़ज़ा, अल फ़स्लिस्सालिस, अल ह़दीस:3721, जि.2, स.12)

मैं अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं बादशाहों का मालिक और बादशाहों का बादशाह हूं। बादशाहों के दिल मेरे दस्ते क़ुदरत में हैं। जब लोग

मेरी ताबेअ़दारी करें मैं बादशाहों के दिलों में रह़मत और नरमी डाल देता हूं और जब मेरी मुख़ालिफ़त करें तो उन के दिलों को अ़ज़ाब और ग़ज़ब की त़रफ़ फेर देता हूं फिर वोह उन को सख़्त ईज़ाएं देते हैं। तो लोगों को चाहिये कि बादशाहों को बुरा कहने में मश्ग़ूल न हों बल्कि ज़िक्र और आ़जिज़ी इख़्तियार करें फिर बादशाहों की त़रफ़ से मैं काफ़ी हो जाऊंगा। या'नी वोह रिआया के साथ सुलूक व मह़ब्बत से पेश आएंगे। इस ह़दीस में ऐसे मौक़अ़ पर जो इ़लाज ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** ने फ़रमाया है अफ़्सोस कि लोग उस पर अ़मल नहीं करते बल्कि उस का ख़िलाफ़ करते हैं येही वजह है कि उन की चीख़ो पुकार में कोई असर नहीं होता। ह़ज़राते सूफ़िया کثرھم اللہ تعالٰی ने इस ह़दीस पर अ़मल किया और ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** के फ़रमूदा इ़लाज में शबो रोज़ मश्ग़ूल हैं। मुसल्मानों को अस्ली मा'नों में मुसल्मान बनाने की कोशिश कर रहे हैं। तो येह ह़ज़राते सूफ़िया लोगों को ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रखते हैं और इसी की तरग़ीब देते हैं। तज़र्रोअ़ व ज़ारी का सबक़ पढ़ाते हैं कामिल मोमिन बनाते हैं। ताकि ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** बादशाहों के दिलों में उन की मह़ब्बत व रह़मत डाल दे। इस ह़दीस का येही मक़्सूद है। मगर अफ़्सोस कि फ़ी ज़माना लीडराने क़ौम ह़ज़राते सुफ़िया साफ़िया के ख़िलाफ़ प्रोपेगन्डा फैला रहे हैं और लोगों के दिलों में उन की निस्बत बद ज़ेहनियां डालते हैं कि येह लोग ख़ामोश बैठें हैं मैदान में नहीं निकलते ह़ालांकि येह लोग हैं जो इस म-रज़ की असलिय्यत को मा'लूम कर के इस के इ़लाज में मश्ग़ूल हैं।

جعلنی اللہ منھم۔ امین۔

अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान अपनी रइय्यत को फ़रमाया करते थे : लोगो ! तुम चाहते हो कि हम तुम्हारे साथ अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا

की सीरत इख़्तियार करें । लेकिन तुम अपनी सीरत उन की रइय्यत की सीरत व ख़स्लत की त़रह़ नहीं बनाते तुम उन की रइय्यत की त़रह़ हो जाओ हम भी तुम्हारे साथ अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا का सा मुआ़मला करेंगे । (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरल हुक्काम, स.43)

ह़ज़रते सुफ़ियान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हम ने ऐसे आ़लिमों को पाया है जो अपने घरों में बैठे रहने को अफ़्ज़ल समझते थे । आज उ़-लमा अमीरों के वज़ीर और ज़ालिमों के दारोग़े बन गए हैं ।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरल हुक्काम, स.44 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने पूछा कि कोई शख़्स किसी ज़ालिम का मुन्शी हो तो क्या जाइज़ है ? फ़रमाया कि बेहतर है कि मुलाज़मत छोड़ दे । ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की थी : فَلَنْ اَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ कि मैं मुजरिमों का मददगार हरगिज़ न हूंगा ।

(पा.20, अल क़सस:17)

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरल हुक्काम, स.44 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि वालियों और ह़ाकिमों की त़रफ़ से उन को अ़त़िय्यात मिलेंगे उन की क़ीमत उन का दीन होगा । (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरल हुक्काम, स.44 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते सुफ़ियान सौरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो शख़्स ज़ालिम के सामने हंसे या उस के लिये मजलिस में जगह फ़राख़ करे या उस का अ़त़िय्या ले ले, तो उस ने इस्लाम की रस्सी को तोड़ डाला और वोह ज़ालिमों के मददगारों में लिखा जाता है । (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरल हुक्काम, स.44 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते त़ाऊस رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه अक्सर घर में बैठे रहते थे लोगों ने दरयाफ़्त किया तो फ़रमाने लगे कि मैं ने इस लिये घर बैठे रहने को पसन्द किया है कि रइय्यत ख़राब हो गई है सुन्नत जाती रही बादशाहों और अमीरों में ज़ुल्म की आ़दत हो गई है जो शख़्स अपनी औलाद और ग़ुलाम में इक़ामते ह़क़ में फ़र्क़ करे वोह ज़ालिम है। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरल हुक्काम, स.44 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : जब अमीर दुबला होने के बाद मोटा हो जाए तो जान लो कि उस ने रइय्यत की ख़ियानत की और अपने रब की ख़ियानत की। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरल हुक्काम, स.44 मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते अबुल आ़लिया رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه एक दिन रशीद के पास आए फ़रमाया कि मज़्लूम की दुआ़ से बचते रहना कि अल्लाह तआ़ला मज़्लूम की दुआ़ रद नहीं करता अगर्चे वोह फ़ाजिर हो। एक रिवायत में है अगर्चे वोह काफ़िर हो। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहुम अ़ला जोरल हुक्काम, स.45) या'नी मज़्लूम कोई भी हो उस की आह से बचना चाहिये।

क़िल्लते ज़ह़क

सलफ़ सालिह़ीन की आ़दाते मुबारका में से क़िल्लते ज़ह़क भी था। वोह कम हंसते थे और दुन्या की किसी शै के मिलने पर ख़ुश नहीं होते थे। अज़् क़िस्म लिबास हो या सुवारी या कोई और वोह डरते थे कि ऐसा न हो कि आख़िरत की ने'मतों से कोई ने'मत दुन्या में ह़ासिल हो गई हो। उन की आ़दत दुन्यादारों की आ़दत के बर ख़िलाफ़ थीं। दुन्यादार तो दुन्या मिलने से ख़ुश होते हैं लेकिन सलफ़ सालिह़ीन दुन्या मिलने से ख़ुश नहीं होते थे। फ़िल ह़क़ीक़त जो शख़्स मह़बूस हो वोह किसी शै से कैसे ख़ुश हो सकता है।

जिस त़रह़ क़ैदी क़ैद में मुक्दर रहता है इसी त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दे इस दुन्या में ग़मनाक रहते हैं। उन को येही ख़याल रहता है कि इस दारे दुन्या से जल्दी ख़लासी हो और ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** की लिक़ा से शरफ़ ह़ासिल हो। **ह़दीस शरीफ़** में आया है

والذی نفسی بیده لو تعلمون ما اعلم لضحکتم قلیلا ولبکیتم کثیرا ولما تلذذتم بانساء علی الفرش ولخرجتم الی الصعدات تجارون الی اللّٰه عزوجل

(सुननुत्तिरमिज़ी, किताबुज़्ज़ोहद, बाब क़ौलन्नबी लव तअ़लमून...अलख़, अल ह़दीस:2319, जि.4, स.140. तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, क़िल्लत जह़कहुम व मजह़हुम बिदुन्या, स.47)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर तुम जानते जो मैं जानता हूं तो तुम थोड़ा हंसते और बहुत रोते और औ़रतों के साथ फ़राशों पर कभी लज़्ज़त न उठाते और जंगलों की त़रफ़ निकल जाते और ख़ुदा तआ़ला की जनाब में पनाह चाहते। इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि बहुत हंसना अच्छा नहीं है जहां तक हो सके ख़ुदा के ख़ौफ़ से रोना लाज़िम है और येह भी मा'लूम हुवा कि सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ात से आ'लम हैं आप का इ़ल्म सब से ज़ियादा है।

ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शख़्स को देखा है कि वोह हंस रहा है आप ने फ़रमाया : **یا فتی هل مررت بالصراط** ऐ जवान ! क्या तू पुल सिरात़ से गुज़र चुका है ? उस ने कहा : नहीं ! फिर फ़रमाया : **هل تدری الی الجنة تصیر ام الی النار** क्या तू जानता है कि तू जन्नत में

जाएगा या दोज़ख़ में ? उस ने कहा कि नहीं ! फ़रमाया : فما هذا الضحك फिर येह हंसना कैसा है ? (एह्याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल ख़ौफ़ व र्रज़ा, बयान अह्वालिस्सह़ाबा...अलख़, जि.4, स.224) या'नी जब ऐसी मुश्किलात तेरे सामने हैं और तुझे अपनी नजात का भी इ़ल्म नहीं तो फिर किस ख़ुशी पर हंस रहा है इस के बा'द वोह शख़्स किसी से हंसता हुवा नहीं देखा गया।

ह़दीसे क़ुदसी में आया है "عجبا لمن ایقن بالموت کیف یفرح" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत का यक़ीन रखता है फिर कैसे हंसता है।" (शुउ़बुल ईमान, बाबो फ़ी क़द्र ख़ैरह...अलख़, अल ह़दीस:212, जि.1, स.222)

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को पूछा गया कि ख़ाइफ़ीन कौन हैं ? फ़रमाया :

قلوبهم بالخوف قرحه و اعينهم باكية يقولون كيف نفرح والموت من ورائنا والقبر امامنا والقيامة موعدنا و على جهنم طريقنا و بين يدى الله ربنا موقفنا

(अह्याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल ख़ौफ़ वर्रिजा, बयान अह्वालस्सह़ाबा...अलख़, जि.4, स.227)

कि उन के दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से ज़ख़्मी हैं उन की आंखें रोती हैं वोह कहते हैं कि हम कैसे ख़ुशी करें जब कि मौत हमारे पीछे हैं और क़ब्र हमारे सामने हैं और क़ियामत हमारे वा'दे की जगह है जहन्नम पर से गुज़रना है और ह़क़ سبحانه و تعالٰی के सामने खड़ा होना।

ह़ज़रते ह़ातिम असम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि इन्सान उ़म्दा जगह पर मग़रूर न हो क्यूं कि आदम عَلَیْہِ السَّلَام जो कि जन्नत में निहायत आ'ला और उ़म्दा जगह में थे उन को इस जगह से बाहर तशरीफ़ लाना पड़ा और कसरते इबादत पर भी मग़रूर न होना चाहिये कयूं कि इब्लीस बा

वुजूद कसरते इबादत के मल्ऊ़न हुवा और कसरते इल्म पर मग़रूर न होना चाहिये कयूं कि बल्अ़म जो कि इस्मे आ'ज़म का आ़लिम था आख़िर उस के साथ क्या मुआ़मला हुवा और सालिह़ीन की कसरते ज़ियारत करने पर भी मग़रूर न होना चाहिये क्यूं कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़ारिब जिन्हों ने रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ब कसरत ज़ियारत की थी जो मुसल्मान न हुए तो आप की ज़ियारत ने उन को कुछ नफ़्अ़ न पहुंचाया।

(तज़किरतुल औलिया, बाबो बीस्त व हफ़्तम, ज़िक्रे ह़ातिमे असम्म, नीमए अव्वल, स.225)

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه यहां तक ख़ौफ़नाक और ग़मनाक रहा करते थे कि येही मा'लूम होता था कि गोया अभी कोई ताज़ा गुनाह कर के डर रहे हैं। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, क़िल्लत ज़ह़कहुम बिदुन्या, स.47)

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि **رُبّ ضاحك واكفانه قد خرجت من عند القصار**۔ (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, क़िल्लत ज़ह़कहुम व मज़ह़हुम बिदुन्या, स.48)

कि बहुत लोग हंसने वाले हैं ह़ालांकि उन के कफ़न का कपड़ा धोबियों के यहां से धोया हुवा आ चुका है। इब्ने मरजूक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जो शख़्स दा'वा करता है कि मुझे गुनाहों का ग़म है फिर खाने में शहद और घी जम्अ़ करता है तो वोह अपने दा'वे में झूटा है। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, क़िल्लत ज़ह़कहुम व मज़ह़हुम बिदुन्या, स.48)

ह़ज़रते अवज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि ह़क़ سبحانه و تعالٰی ने जो आयत में

لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّ لَا كَبِيْرَةً اِلَّآ اَحْصٰهَا

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न उस ने कोई छोटा गुनाह छोड़ा न बड़ा जिसे घेर न लिया हो।

(पा.15, अल कहफ़ :49)

फ़रमाया है इस में सग़ीर से मुराद तबस्सुम और कबीर से मुराद क़हक़हा है। मैं कहता हूं तबस्सुम से वोह तबस्सुम मुराद है जो ज़हक तक पहुंचे, या'नी ऐसा आवाज़ से हंसना जिस को अहले मजलिस सुन लें वरना सिर्फ़ तबस्सुम जिस की आवाज़ न हो रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, क़िल्लते ज़हकहुम व मज़हहुम बिदुन्या, स.48)

हज़रते साबित बुनानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मोमिन जब कि मौत से ग़ाफ़िल हो तो हंसता है। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, क़िल्लते ज़हकहुम व मज़हहुम बिदुन्या, स.48) या'नी मौत याद हो तो उस को हंसी नहीं आती। हज़रते आमिर बिन क़ैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स दुन्या में बहुत हंसता है वोह क़ियामत में बहुत रोता है।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, क़िल्लते ज़हकहुम व मज़हहुम बिदुन्या, स.48)

हज़रते सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه चालीस साल तक न हंसे यहां तक कि आप को मौत आ गई। इसी तरह़ ग़ज़वान रक़्क़ाशी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नहीं हंसते थे। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल अव्वल, क़िल्लते ज़हकहुम व मज़हहुम बिददुन्या, स.48)

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : **مع کل ضحاك فی مجلس شیطان** (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल अव्वल, क़िल्लते ज़हकहुम व मज़हहुम बिददुन्या, स.48) मजलिस में हर हंसने वाले के साथ शैत़ान होता है। हज़रते मआ़ज़ह अदविय्या رَحْمَةُ اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهَا एक दिन ऐसे नौ जवानों पर गुज़रे जो कि हंस रहे थे और उन का लिबास सोफ़ का था या'नी लिबास सूफ़ियाना था तो आप ने फ़रमाया :

سبحان اللّٰه لباس الصالحین وضحك الغافلین۔ (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल अव्वल, क़िल्लते ज़हकहुम व मज़हहुम बिददुन्या, स.48)

سُبْحٰنَ الله عَزَّوَجَلَّ ! लिबास तो सालिहीन का है और हंसना ग़ाफ़िलों का। ह़ज़रते औ़न बिन अबी ज़ैद رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं अ़त़ा सुलमी के पास पचास साल रहा मैं ने उन को कभी हंसते हुए नहीं देखा। (तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, क़िल्लते ज़ह़कहुम व मज़ह़ुम बिद्दुन्या, स.49)

बिरदराने त़रीक़त ! ज़रा अपने अपने ग़रीबानों में मुंह डाल कर देखें कि क्या हम लोगों में सलफ़ सालिह़ीन की आ़दाते मुबारका में से कोई आ़दत पाई जाती है ? क्या हमें ग़फ़्लत ने तबाह नहीं किया ? क्या हमें नजात की चिठ्ठी मिल चुकी है ? क्या हम आने वाली घाटियों को त़ै कर चुके हैं ? फिर क्या वजह है कि हम अपनी आख़िरत से बे फ़िक्र हैं ? इस वक़्त को ग़नीमत समझो और अपने ख़ालिक़ व मालिक की रिज़ा ह़ासिल करने की कोशिश करो। अल्लाह तआ़ला आप को और मुझ को भी तौफ़ीक़ दे। आमीन।

कसरते ख़ौफ़

सल्फ़ सालिह़ीन की आ़दाते मुबारका में से येह भी था कि वोह अपने इब्तिदाई ह़ाल और इन्तिहाई ह़ाल में अल्लाह तबारक व तआ़ला से बहुत डरते थे। इब्तिदा में गुनाहों से और इन्तिहा में अल्लाह तआ़ला की जलालत और ता'ज़ीम के ख़ौफ़ से और दोनों ह़ालतों में ह़क़ سبحانه و تعالٰی से नादिम रहते थे। ह़ज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं चार चीज़ें हैं जब कोई आदमी उस में इफ़रात़ करे वोह उस को हलाक कर देती हैं। एक कसरते जिमाअ़, दूसरी कसरते शिकार, तीसरी कसरते जुवा बाज़ी, चौथी कसरते गुनाह।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़ुहुम मिनल्लाहि दाइम, स.53)

ह़ज़रते अबू तुराब नख़्शी رَحْمَۃُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه कहते हैं कि जब आदमी गुनाह तर्क करने का इरादा कर लेता है तो अल्लाह तआ़ला की इम्दाद हर

त़रफ़ से उस की मुमिद होती है।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिनल्लाहि दाइम, स.53)

ह़ज़रते अबू मुह़म्मद मरूज़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि इब्लीस इस लिये मर्दूद हुवा कि उस ने अपने गुनाह का इक़रार न किया, न उस पर नदामत की, न अपने नफ़्स को मलामत की, न तौबा की त़रफ़ मुबादरत की और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से ना उम्मीद हो गया। ह़ज़रते आदम عَلَیۡہِ السَّلَام ने अपनी लग़्ज़िश का इक़रार किया और उस पर नादिम हुए और अपने नफ़्स पर मलामत की और तौबा की त़रफ़ मुबादरत फ़रमाई और अल्लाह तआ़ला की रह़मत से मायूस न हुए।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सआ़दते आदम व शक़ावते इब्लीस, स.53)

तो अल्लाह तआ़ला ने उन को मक़्बूल फ़रमाया। ह़ज़रते ह़ातिमे असम्म رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि जब तू अल्लाह की बे फ़रमानी करे तो जल्दी ताइब हो कर नादिम हो।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सआ़दते आदम व शक़ावते इब्लीस, स.53)

ह़ज़रते इब्राहीम बिन अद्हम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते थे कि मैं मुत़ीअ़ हो कर दोज़ख़ में जाऊं येह इस से बेहतर है कि मैं आ़सी हो कर जन्नत में जाऊं।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सआ़दते आदम व शक़ावते इब्लीस, स.53)

ह़ज़रते अह़मद बिन ह़र्ब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाया करते थे : क्या गुनहगार के लिये वोह वक़्त नहीं आया कि वोह तौबा करे। उस का गुनाह तो उस के दफ़्तर में लिखा गया और वोह कल अपनी क़ब्र में इस के सबब मुब्तलाए सख़्ती होगा और इसी गुनाह के सबब दोज़ख़ में डाला जाएगा।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, सआ़दते आदम व शक़ावते इब्लीस, स.53)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते थे कि

किसी आ़क़िल को मुनासिब नहीं कि अपने महबूब को ईज़ा दे। लोगों ने पूछा कि येह कैसे हो सकता है ? फ़रमाया : अपने ख़ालिक़ और मालिक की बे फ़रमानी करने के सबब इन्सान अपने नफ़्स को ईज़ा देता है।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सआ़दते आदम व शक़ावते इब्लीस, स.53)

और उस का नफ़्स उस का महबूब है या'नी अपनी जान को मुब्तलाए अ़ज़ाब करना अ़क़्लमन्दी नहीं। एक अ़रबी शाइ़र कहता है

ایا عاملا للنار جسمک لین　　فجربه لتمرینا بحر الظهیرة

و درجه فی لسع الزنابیر تجتری　　علی نهش حیات هناک عظیمة

या'नी ऐ वोह शख़्स कि तू दोज़ख़ के लिये तैयारियां कर रहा है, तेरा जिस्म तो बहुत नाज़ुक है फिर वोह दोज़ख़ में अ़ज़ाब कैसे बरदाश्त करेगा, तो दो पहर की सख़्त गरमी में खड़े हो कर अपने जिस्म की आज़्माइश कर कि वोह उस में सब्र व तहम्मुल कर सकता है ! फिर तू ज़म्बूरों के छत्तों में उन के डंकों को बरदाश्त नहीं कर सकता। तो दोज़ख़ के बड़े बड़े अज़्दहा पर क्यूं जुरअत करता है।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं :

العمل الصالح مع قلة الذنوب احب الی اللّٰه من کثرة العمل الصالح مع کثرة الذنوب

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सआ़दते आदम व शक़ावते इब्लीस, स.54)

कि अ़मले सालेह़ गुनाहों की कमी के साथ अल्लाह तआ़ला को ज़ियादा पसन्द है इस से कि आ'माल की कसरत के साथ गुनाहों की भी कसरत हो। हज़रते मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि हम गुनाहों में ग़रक़ हो गए अगर कोई शख़्स मेरे गुनाहों की बदबू सूंघे तो मेरे पास न बैठ सके। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, सआ़दते आदम व शक़ावते इब्लीस, स.54, मुलख़्ख़सन)

हज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि जिन लोगों ने हज़रते इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ को क़त्ल किया है अगर वोह अल्लाह

तआ़ला के फ़ज़्लो करम से बख़्शे भी जाएं तो वोह रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क्या मुंह दिखाएंगे। ख़ुदा की क़सम ! अगर ह़ज़रते हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के क़त्ल में मेरा दख़्ल होता और मुझे जन्नत और दोज़ख़ का इख़्तियार दिया जाता तो मैं दोज़ख़ इख़्तियार करता इस ख़ौफ़ के सबब कि जन्नत में रसूले करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने किस मुंह जाऊं। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, अल ह़सन अल बसरी व क़त्लह अल हुसैन, स.54, मुलख़्ख़सन)

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : जिस शख़्स ने अल्लाह तआ़ला की इत़ाअ़त की उस ने उस को याद किया अगर्चे उस की नमाज़ और रोज़े और तिलावते क़ुरआन कम हों और जिस ने उस की ना फ़रमानी की उस ने उस को भुला दिया।

(तम्बीहुल मुग़तरीन अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्दज़्ज़ुनुब शर्र, स.55)

ह़ज़रते सुफ़ियान बिन ऐ़ना رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया कि मलाइका बन्दे का इरादा किस त़रह़ लिखते हैं ? या'नी वोह फ़िरिश्ते जो नेकी बदी लिखने पर मामूर हैं जब किसी बन्दे ने नेकी या बदी का इरादा किया और अभी अ़मल नहीं किया तो वोह इरादे को किस त़रह़ मा'लूम कर सकते हैं ? आप ने फ़रमाया : जब बन्दा नेकी करने का इरादा करता है तो उस से कस्तुरी सी ख़ुश्बू निकलती है और वोह ख़ुश्बू से मा'लूम कर लेते हैं कि उस ने नेकी का इरादा किया और जब बुराई का इरादा करता हैं उस से बदबू निकलती है तो उन को मा'लूम हो जाता है कि उस ने बदी का इरादा किया। मैं कहता हूं यहां इरादे से अ़ज़्मे मुसम्मम मुराद है।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्द अज़्ज़ुनुबे शर्र, स.54, मुलख़्ख़सन)

जो अ़ज़्मे मुसम्मम न हो वोह लिखा नहीं जाता। ह़ज़रते बिश्र ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि हम ने ऐसे लोग देखे हैं जिन के

आ'माले सालेह़ा पहाड़ों के बराबर थे फिर भी वोह गुर्रा नहीं थे लेकिन अब तुम्हारा वोह ह़ाल है कि अ़मल कुछ भी नहीं और उस पर गुर्रा हो। ख़ुदा की क़सम ! हमारी बातें तो ज़ाहिदों की सी हैं और हमारे काम मुनाफ़िक़ों के हैं। (तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्द अज़्ज़ुनुबे शर्र, स.56)

ह़ज़रते ह़ातिम असम्म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब तू **अल्लाह** तआ़ला की ना फ़रमानी करे और इस ह़ालत में सुब्ह़ करे कि ह़क़ سبحانه و تعالٰی की नेअ़मते तुझ पर घेरा डालने वाली हों तो डर जा कि येह इस्तिदराज है।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्द अज़्ज़ुनुबे शर्र, स.56)

या'नी ह़क़ سبحانه و تعالٰی की त़रफ़ से तुझे ढील दी गई है। इस पर मग़रूर न हो और जल्द ताइब हो कि अल्लाह तआ़ला जब पकड़ेगा सख़्त पकड़ेगा मौलाना रूम फ़रमाते हैं

बीं मशू मग़रूर बर ह़िल्मे ख़ुदा   देर गिर्द सख़्त गिर्द मर तरा

ह़ज़रते ह़ातिम असम्म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम ने ऐसे लोगों को पाया जो कि छोटे छोटे गुनाहों को बड़ा ख़याल करते थे और तुम बड़े बड़े गुनाहों को बिल्कुल छोटा ख़याल करते हो।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्द अज़्ज़ुनुबे शर्र, स.56)

ह़ज़रते रबीअ़ बिन ख़सीम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ईद की सुब्ह़ को फ़रमाया करते थे : मुझे तेरी इ़ज़्ज़त व जलालिय्यत की क़सम है अगर मैं मा'लूम करूं कि तेरी रिज़ा मेरे नफ़्स के ज़ब्ह़ करने में है तो मैं आज अपना नफ़्स तेरे लिये ज़ब्ह़ कर दूं। (तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्दज़्ज़ुनुब शर्र, स.56)

ह़ज़रते कहमस बिन ह़सन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه चालीस साल रोते रहे सिर्फ़ इतनी बात के ख़ौफ़ से कि उन्हों ने एक दिन हमसाया की मिट्टी से उस की इजाज़त के बिग़ैर हाथ धोए। (तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्दज़्ज़ुनुब शर्र, स.56)

ह़ज़रते कहमस رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं कि हम को येह ख़बर पहुंची है कि ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** ने ह़ज़रते दावूद عَلَيۡهِ السَّلَام पर वह्य भेजी कि ऐ दावूद ! (عَلَيۡهِ السَّلَام) बनी इस्राईल को कह दीजिये कि तुम को किस त़रीक़े से येह ख़बर पहुंची है कि मैं ने तुम्हारे गुनाह बख़्श दिये कि तुम ने गुनाहों पर नदामत छोड़ दी है। मुझे अपनी इ़ज़्ज़त व जलालिय्यत की क़सम है कि मैं हर गुनाहगार से क़ियामत के दिन उस के गुनाह पर ह़िसाब लूंगा। ह़ज़रते इमाम शअ़रानी رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम दिखाएगा ताकि गुनाहगार अपने गुनाहों को देख कर नादिम हो फिर अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्लो करम देखे।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्दज़्ज़ुनुब शर्र, स.56)

ह़ज़रते उ़त्बा ग़ुलाम एक दिन मकान पर पहुंच कर कांपने लगे और पसीना पसीना हो गए दरयाफ़्त किया गया तो आप ने फ़रमाया कि इस मकान में मैंने बचपन की ह़ालत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बे फ़रमानी की थी।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्दज़्ज़ुनुब शर, स.57)

आज वोह ह़ालत याद आ गई है। ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ह़ज के लिये बसरा से पा पियादा निकले किसी ने अ़र्ज़ की के आप सुवार क्यूं नहीं होते ? आप ने फ़रमाया कि भागा हुवा ग़ुलाम जब अपने मौला के दरबार में सुल्ह़ के लिये ह़ाज़िर हो तो क्या उसे सुवार हो कर आना चाहिये ? ख़ुदा की क़सम ! अगर मैं मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में अंगारों पर चलता हुवा आऊं तो भी कम है। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मा बअ़्दज़्ज़ुनुब शर, स.57)

मेरे दीनी भाइयो ! ग़ौर करो बुज़ुर्गाने दीन को किस क़-दर ख़शिय्यते इलाही ग़ालिब थी। आप साह़िबान सिर्फ़ इतना ज़रूर ख़याल किया करें कि वुक़ूए मा'सिय्यत तो हम से यक़ीनन है लेकिन वुक़ूए मग़्फ़िरत मश्कूक है क्यूंकि अल्लाह तआ़ला ने अपनी मग़्फ़िरत को मशिय्यत पर मौक़ूफ़ रखा है जिस का हमें इ़ल्म नहीं इस लिये हमें रात दिन इस्तिग़्फ़ार में मश्ग़ूल रहना चाहिये।

हुक़ूक़ुल इबाद से डरना

सलफ़ सालिह़ीन की आ़दाते मुबारका में से येह भी था कि वोह हुक़ूक़ुल इ़बाद से बहुत डरते थे ख़्वाह मा'मूली सी चीज़ मसलन किसी की ख़िलाल या सोज़न ही हो तो इस से भी डरते थे। ख़ुसूसन जब अपने आ'माल को निहायत कम समझते तो उन के ख़ौफ़ व कर्ब की कोई निहायत न होती थी कि हमारे पास तो कोई ऐसी नेकी नहीं जिसे ख़सम को उस के ह़क़ के बदले क़ियामत के दिन दे कर राज़ी किया जाए। बसा अवक़ात किसी एक ही मज़्लूमा के इ़वज़ में ज़ालिम की तमाम नेकियां ले कर भी मज़्लूम ख़ुश न होगा।

ह़दीस शरीफ़ में आया है कि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُم को पूछा : ''اتدرون من المفلس من امتی یوم القیامة'' क्या तुम जानते हो कि मेरी उम्मत में से क़ियामत के दिन मुफ़्लिस कौन होगा ? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰه تَعَالٰى عَنْهُم ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस के पास दिरहम व दीनार न हो वोह मुफ़्लिस है। तो आप ने फ़रमाया :

"المفلس من یاتی یوم القیٰمة بصیام وصلاة وزکاة وحج ویاتی وقد شتم هذا و کل مال هذا وسفك دم هذا وضرب هذا فیعطی هذا من حسناته وهذا من حسناته فان فنیت قبل ای یقضی ما علیه اخذ من خطایا هم فطرح علیه ثم قذف فی النار"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الظلم، الحدیث: ٥٢٨١، ص ١٣٨٤، باختلاف الالفاظ۔ تنبیه المغترین، الباب الاوّل، خوفهم مما للعباد علیهم، ص ٥٧)

(सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलह, बाबो तह़रीमज़ुल्म, अल ह़दीस:5281, स.1384, ब इख़्तिलाफ़ अल अल्फ़ाज़, तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम ममा लिल इ़बाद अ़लैहिम, स.57)

या'नी मुफ़्लिस वोह शख़्स है कि क़ियामत के दिन नमाज़ रोज़ा ज़कात ह़ज ले कर आए और उस ने किसी को गाली दी हो, किसी का माल खाया हो, किसी को मारा हो (तो मुद्दई आ जाएं और अ़र्ज़ करें कि परवर्द गार इस ने मुझे गाली दी, इस ने मुझे मारा, इस ने मेरा माल खाया, इस ने मेरा ख़ून किया) तो ह़क़ **سبحانه و تعالٰی** उस की नेकियां उन मुद्दइयों को दे दे तो अगर नेकियां ख़त्म हो जाएं कोई नेकी बाक़ी न रहे और मुद्दई अगर बाक़ी हों तो उन के गुनाह उस पर डाले जाएंगे। फिर उस को दोज़ख़ का हुक्म दिया जाएगा और वोह दोज़ख़ में डाला जाएगा। या'नी ह़क़ीक़त में मुफ़्लिस वोह शख़्स है कि क़ियामत के रोज़ बा वुजूदे नमाज़ रोज़ा ह़ज ज़कात होने के फिर वोह ख़ाली का ख़ाली रह जाए।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अनीस رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि अल्लाह **جل شانه و عم نواله** क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा कि कोई दोज़ख़ी दोज़ख़ में और कोई जन्नती जन्नत में दाख़िल न हो जब तक वोह हुक़ूक़ुल इ़बाद का बदला न अदा करे। (तम्बिदुल मुग़तरीन, बाबुव अव अव्वल, ख़ौफ़हुम मिम्मा लिल इबाद अ़लयहिम, स. 58)

या'नी जो किसी का ह़क़ किसी ने दबाया हो उस का फ़ैसला होने तक कोई दोज़ख़ ,जन्नत में दाख़िल न होगा।

ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फरमाते है कि बनी इसराईल मे एक नौ जवान ने हर क़िस्म के गुनाहों से तौबा की फिर सत्तर साल इबादते इलाही में शबो रोज़ लगाता रहा, दिन को रोज़ा रखता, रात को जागता किसी साया के नीचे आराम न करता, न कोई उ़म्दा ग़िज़ा खाता। जब वोह मर गया, उस के बा'ज भाइयों ने उसे ख़्वाब में देखा और पूछा कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला किया ? उस ने कहा ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ने मेरा

हिसाब लिया फिर सब गुनाह बख़्श दिये मगर एक लकड़ी जिस से मैं ने उस के मालिक की इजाज़त के बिग़ैर दातों में ख़िलाल किया था, उस के सबब मैं आज तक जन्नत से महबूस हूं। (तम्बिदुल मुग़तरीन, बाबुव अव अव्वल, ख़ौफ़हुम मिम्मा लिल इबाद अ़लयहिम, स. 58)

या'नी रोका गया हूं। मैं कहता हूं : हदीस शरीफ़ में इस की ताइद आई है कि अल्लाह तआ़ला ने तीन चीज़ों को तीन चीज़ों में मख़्फ़ी रखा है (1) अपनी रिज़ा को अपनी इताअ़त में मख़्फ़ी रखा और (2) अपनी नाराज़गी को ना फ़रमानी में और (3) अपने औलिया को अपने बन्दों में।

(तम्बीहुल मुग़तरीन, बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिम्मा लिल इबाद अ़लयहिम, स. 58)

तो हर इताअ़त और हर नेकी को अ़मल में लाना चाहिये कि मा'लूम नहीं किस नेकी पर वोह राज़ी हो जाएगा और हर बदी से बचना चाहिये क्यूंकि मा'लूम नहीं कि वोह किस बदी पर नाराज़ है ख़्वाह वोह बदी कैसी ही सग़ीर हो म-सलन किसी की लकड़ी का ख़िलाल करना एक मा'मूली सी बात है या किसी हमसाये की मिट्टी से उस की इजाज़त के बिग़ैर हाथ धोना गोया एक छोटी सी बात है मगर चूंकि हमें मा'लूम नहीं इस लिये मुम्किन है कि इस बुराई में हक़ तआ़ला की नाराज़गी मख़्फ़ी हो तो ऐसी छोटी छोटी बातों से भी बचना चाहिये।

हज़रते हारिस मुहासबी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स कय्याल जो कि ग़ल्लाजात का मापने वाला था उस ने इस काम से तौबा की और इबादते इलाही में मश्ग़ूल हुवा जब वोह मर गया तो उस के बा'ज़ अहबाब ने उस को ख़्वाब में देखा और पूछा कि अल्लाह तआ़ला ने आप के साथ क्या मुआ़मला किया। उस ने कहा कि मेरे माप में (या'नी इस टोपा में जिस से ग़ल्ला मापता था) कुछ मिट्टी सी बैठ गई थी। जिस का मैं ने कुछ न किया तो हर टोपा मापने के वक़्त ब क़-दरे उस मिट्टी के कम हो जाता था तो

मैं इस क़ुसूर के सबब मा'रिज़े इ़ताब में हूं।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिम्मा लिल इ़बाद अ़लैहिम, स.58)

इसी त़रह़ एक शख़्स अपनी तराज़ू को मिट्टी वग़ैरा से साफ़ नहीं करता था इसी त़रह़ चीज़ तोल देता था, जब वोह मर गया तो उस को क़ब्र में अ़ज़ाब शुरूअ़ हो गया। यहां तक कि लोगों ने इस की क़ब्र में से चीख़ने चिल्लाने की आवाज़ सुनी तो बा'ज़ सालिह़ीन ने उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत की।(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिम्मा लिल इ़बाद अ़लैहिम, स.58)तो उस की ब-र-कत से अल्लाह तआ़ला ने उस के अ़ज़ाब को दफ़्अ़ किया।

ह़ज़रते अबू मैसरा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि एक मय्यित को क़ब्र में अ़ज़ाब हो रहा था और उस से आग के शो'ले ज़ाहिर हुए तो मुर्दे ने पूछा : मुझे क्यूं मारते हो ? फ़िरिश्तों ने कहा कि तू एक मज़्लूम पर गुज़रा, उस ने तुझ से इस्तिग़ासा किया मगर तू ने उस की फ़रियाद रसी न की और एक दिन तू ने बे वुज़ू नमाज़ पढ़ी। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिम्मा लिल इ़बाद अ़लैहिम, स.59)

शरीह़ क़ाज़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाया करते थे : **ایاکم والرشوۃ فانھا تعمی عین الحکیم** (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिम्मा लिल इ़बाद अ़लैहिम, स.59)

कि तुम रिश्वत से बचा करो कि रिश्वत ह़कीम की आंख को अंधा कर देती है। ह़ज़रते इमाम ह़सन बसरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जब किसी ह़ाकिम को देखते कि वोह मसाकीन पर कुछ तसद्दुक़ करता है तो आप फ़रमाते : ऐ स-दक़ा देने वाले तू ने जिस पर ज़ुल्म किया हो उस पर रह़्म कर और इस की दाद रसी कर कि येह काम स-दक़ात से बहुत बेहतर है।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिम्मा लिल इ़बाद अ़लैहिम, स.59)

ह़ज़रते मैमून बिन महरान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी पर ज़ुल्म करे फिर उस गुनाह से नजात ह़ासिल करना चाहे तो चाहिये कि हर नमाज़ के बा'द उस शख़्स के ह़क़ में दुआ़ए मग़्फ़िरत करे तो अल्लाह तआ़ला उस के गुनाह मुआ़फ़ कर देगा।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिम्मा लिल इबाद अ़लैहिम, स.59)

मैं कहता हूं : येह उस सूरत में है कि वोह मज़्लूम फ़ौत हो जाए और अगर ज़िन्दा हो तो उस से मुआ़फ़ कराए। ह़ज़रते मैमून बिन महरान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि बा'ज़ अवक़ात नमाज़ी नमाज़ में अपने आप पर ला'नत कहता है और वोह जानता नहीं। लोगों ने पूछा कि येह कैसे हो सकता है ? फ़रमाया कि वोह पढ़ता है :

اَلَا لَعۡنَۃُ اللّٰہِ عَلَی الظّٰلِمِیۡنَ o ज़ालिमों पर अल्लाह की ला'नत।

(पा.12, हूद:18)

और वोह ख़ुद ज़ालिम होता है कि उस ने अपने नफ़्स पर ब सबब गुनाहों के ज़ुल्म किया होता है और लोगों के अम्वाल ज़ुल्मन उस ने लिये होते हैं।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मिम्मा ख़ौफ़हुम लिल इबाद, स.59)

और किसी की बे इ़ज़्ज़ती की होती है तो لَعۡنَۃُ اللّٰہِ عَلَی الظّٰلِمِیۡنَ o उस को भी शामिल होती है।

ह़ज़रते कअ़ब अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने एक शख़्स को देखा कि वोह जुमुआ़ के दिन लोगों पर ज़ुल्म करता है आप ने फ़रमाया कि तू डरता नहीं ? ऐसे दिन में ज़ुल्म करता है जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी और जिस दिन तेरा बाप आदम عَلَیۡہِ السَّلَام पैदा हुवा।

(तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मिम्मा ख़ौफ़हुम लिल इबाद, स.60)

ह़ज़रते अह़मद बिन ह़र्ब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि दुन्या से कई क़ौमें कसरते ह़-सनात के साथ ग़नी निकलेंगी और क़ियामत में मुफ़्लिस

होंगी कि हुक़ूक़ुल इ़बाद में सब ह़-सनात खो बैठेंगी। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, मिम्मा ख़ौफ़ुहुम लिल इ़बाद, स.60)

ह़ज़रते सुफ़ियान सौरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : अगर तू सत्तर[70] गुनाह अपने ख़ालिक़ के, लिये हुए ख़ालिक़ के दरबार में पेश हो तो येह इस से बेहतर है कि तू मख़्लूक़ का एक गुनाह ले कर जाए। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, मिम्मा ख़ौफ़ुहुम लिल इ़बाद, स.60)

या'नी हुक़ूक़ुल इ़बाद में से एक गुनाह ख़ुदा तआ़ला के सत्तर[70] गुनाह से बहुत बड़ा है। प्यारे नाज़िरीन ग़ौर फ़रमावें कि बुज़ुर्गाने दीन को हुक़ूक़ुल इ़बाद का किस क़-दर ख़ौफ़ था तो हमें भी चाहिये कि इन बुज़ुर्गों के इत्तिबाअ़ में हुक़ूक़ुल इ़बाद से बचते रहें और ह़त्तल वस्अ़ अपनी ह़याती में हुक़ूक़ुल इ़बाद की निस्बत अपना मुआ़मला साफ़ कर लेना चाहिये।

क़ियामत का डर

सलफ़ सालिह़ीन की आ़दाते मुबारका में से था कि वोह जब क़ियामत के होलनाक ह़ालात सुनते थे तो बहुत डरते थे और जब क़ुरआन शरीफ़ सुनते थे तो उन्हें ग़शी हो जाती थी। रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक रोज़ येह आयत पढ़ी :

اِنَّ لَدَیۡنَاۤ اَنۡکَالًا وَّجَحِیۡمًا ۙ
وَّطَعَامًا ذَا غُصَّۃٍ وَّعَذَابًا اَلِیۡمًا ۙ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हमारे पास भारी बेड़ियां हैं और भड़कती आग और गले में फंसता खाना और दर्दनाक अ़ज़ाब। (पा.29, अल मुज़्ज़म्मिल:12 ता 13)

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि हमारे पास बेड़ियां हैं और आग है और खाना है गले में अटकने वाला और अ़ज़ाब है दुख देने वाला, तो ह़मरान बिन अईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ सुन रहे थे येह आयत सुनते ही ग़श खा कर गिरे और वफ़ात पा गए। (तम्बीहुल मुग़तरीन, अल बाबुल अव्वल, मिम्मा ख़ौफ़ुहुम मिन अहवालिल क़ियामह, स.60)

एक दफ़्आ ह़ज़रते यज़ीद रक़्क़ाशी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ के पास गए तो ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने फ़रमाया कि ऐ यज़ीद ! मुझे कोई नसीह़त कर। ह़ज़रते यज़ीद ने फ़रमाया : ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! तू वोह पहला ख़लीफ़ा नहीं जो मरेगा या'नी तुझ से पहले ख़ुलफ़ा भी फ़ौत हो गए और तू भी फ़ौत हो जाएगा। ख़लीफ़ा उ़मर ने रोना शुरूअ़ किया और फ़रमाया कि कुछ और फ़रमाइये। ह़ज़रते यज़ीद رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने कहा कि तेरे और ह़ज़रत आदम عَلَیہِ السَّلَام के दरमियान तेरे आबा में से कोई ज़िन्दा नहीं है। फिर ख़लीफ़ा रोए और बहुत रोए और फ़रमाया कि और फ़रमाइये । उन्हों ने फ़फ़्माया कि जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान कोई तीसरा मक़ाम नहीं इस पर ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ रोए और ग़श खा कर गिर पड़े। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मिम्मा ख़ौफ़ुहुम मिन अहवालिल क़ियामह, स.61)

ह़ज़रते ह़सन बिन सालेह رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने एक बार अज़ान देते हुए जब **اشهد ان لا اله الا الله** कहा तो ग़श खा कर गिर पड़े। लोगों ने उन को मनारा से उतारा। उन के भाई ने अज़ान दी और नमाज़ पढ़ाई और ह़सन बेहोश थे। ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़सन बिन सालेह़ से बढ़ कर ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ वाला कोई आदमी नहीं देखा। एक रात सुब्ह़ तक सूरए **عمّ يتسآء لون** की ही तकरार करते रहे। सूरए मज़्कूर पढ़ते तो ग़श हो जाता जब इफ़ाक़ा होता तो फिर वुज़ू करते फिर पढ़ते फिर ग़श हो जाता इसी त़रह़ करते करते आप رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने सुब्ह़ कर दी। (तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, मिम्मा ख़ौफ़ुहुम मिन अहवालिल क़ियामह, स.61)

ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने एक औ़रत को देखा कि वोह अपने किसी अ़ज़ीज़ की क़ब्र पर रो रही थी और कहती थी :

لیت شعری بای خدیك بدء الدود काश ! मुझे मा'लूम होता कि क़ब्र के कीड़े ने तेरे किस रुख़्सारह के काटने में इब्तिदा की । ह़ज़रते दावूद त़ाई رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ येह अल्फ़ाज़ सुन कर बेहोश हो कर गिर पड़े ।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिन अहवालिल क़ियामत, स.61)

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنہُ ने एक दफ़्आ़ सूरह اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ को पढ़ना शुरूअ़ किया जब

وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब नामए आ'माल खोले जाएं ।

(पा.30, अत्तक्वीर:10)

पर पहुंचे तो ग़श खा कर गिर पड़े और ज़मीन पर बहुत देर तक लेटे रहे ।

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिन अहवालिल क़ियामत, स.61)

फ़ा :- जो लोग ह़ज़राते सूफ़िया رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی के वज्द व ह़ाल पर इस्तिहज़ा करते हैं वोह इन रिवायात पर ग़ौर करें और शैत़ानी वस्वसों से बाज़ आएं ।

ह़ज़रते रबीअ़ बिन ख़सीम رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ ने एक क़ारी को सुना वोह पढ़ रहा था :

اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब वोह उन्हें दूर जगह से देखेगी तो सुनेंगे उस का जोश मारना चिंघाड़ना ।

(पा.18, अल फ़ुरक़ान:12)

आप सुनते ही बेहोश हो कर गिरे । लोग उन को उठा कर उन के घर ले गए । आप की नमाज़े ज़ोहर, अ़स्र, मग़रिब, इ़शा फ़ौत हो गईं क्यूंकि आप बेहोश थे । और आप ही अपने मह़ल्ले के इमाम थे । एक रिवायत में है कि पढ़ने वाले ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द थे । رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنہُ

(तम्बीहुल मुग़तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिन अहवालिल क़ियामत, स.62)

ह़ज़रते वहब बिन मुनब्बेह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ कहते हैं कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡہِ السَّلَام जब अपनी लग़्ज़िश याद करते तो आप को ग़शी हो जाती और आप के दिल की आवाज़ एक मील तक सुनाई देती । एक दिन ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیۡہِ السَّلَام नाज़िल हुए और अ़र्ज़ की के अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **هل رأيت خليلا يخاف خليله** क्या तू ने कोई दोस्त देखा है जो अपने दोस्त से डरता हो । ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیۡہِ السَّلَام ने फ़रमाया : **اذا ذكرت خطيئتي نسيت خلتي** जब मुझे अपनी लग़्ज़िश याद आती है तो ख़ल्त भूल जाती है । (एह्याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल ख़ौफ़, बयान अह्वालिल अम्बिया...अलख़, जि.4, स.226)

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने एक दिन फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई तो आप ने सूरए यासीन तिलावत की जब आप इस आयत पर पहुंचे

اِنۡ كَانَتۡ اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ جَمِيۡعٌ لَّدَيۡنَا مُحۡضَرُوۡنَ○

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह तो न होगी मगर एक चिंघाड़ जभी वोह सब के सब हमारे हुज़ूर ह़ाज़िर हो जाएंगे ।

(पा.23, यासीन:53)

तो उन का लड़का अ़ली बेहोश हो कर गिरा और सूरज तुलूअ़ होने तक उस को इफ़ाक़ा न हुवा ।

ह़ज़रते अ़ली बिन फ़ुज़ैल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जब कोई सूरत पढ़ने लगते तो उसे ख़त्म न कर सकते और सूरए **اذا زلزلت** और सूरतुल **القارعة** तो सुन ही नहीं सकते थे । जब वोह फ़ौत हुए तो उन का बाप फ़ुज़ैल हंसा,लोगों ने पूछा तो फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की मौत को पसन्द किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्द करने के लिये मैं ने पसन्द किया ।

(तम्बीहुल मुग़्तरीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़हुम मिन अहवालिल क़ियामह, स.62)

हज़रते मैमून बिन महरान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक शख़्स को सुना कि वोह पढ़ रहा था :

وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِیْنَ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक जहन्नम इन सब का वा'दा है।

(पा.14, अल हज्र:43)

येह सुन कर आप ने चीख़ मारी और सर पर हाथ रख कर जंगल की तरफ़ निकल गए। (तम्बीहुल मुग़्तर्रीन, अल बाबुल अव्वल, ख़ौफ़ुहुम मिन अहवालिल क़ियामह, स.63)

हज़रते इमाम हसन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक शख़्स को देखा कि वोह हंस रहा है फ़रमाया : ऐ जवान ! क्या तू पुल सिरात़ से गुज़र चुका है ? उस ने कहा नहीं ! फ़रमाया : क्या तुझे मा'लूम है कि तेरा ठिकाना जन्नत है या दोज़ख़ ? उस ने कहा : नहीं ! फ़रमाया : फिर हंसना कैसा ? फिर वोह शख़्स कभी हंसता हुवा नहीं देखा गया। (एह्याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल ख़ौफ़ वर्रिजा, बयान अह़्वालिस्सह़ाबा...अलख़, जि.4, स.227)

हज़रते सरी सक़ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं हर रोज़ अपनी नाक को कई बार देखता हूं इस ख़ौफ़ से कि मेरा मुंह सियाह न हो गया हो।(अर्रिसालतुल क़ुशैरिय्या, बाबो फ़ी ज़िक्र मशायख़ हाज़िहित्तरीक़ह, अबुल हसन सरी बिन मुग़्लिस अस्सक़ती, स.29)

अल्लाहु अक्बर ! येह हैं पेश्वाए दीन। اللّٰهم ا جعلنا منهم

हज़रते ज़रारह बिन अबी औफ़ा ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और जब येह आयत पढ़ी :

فَاِذَا نُقِرَ فِی النَّاقُوْرِ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब सूर फूंका जाएगा।

(पा.29, अल मुद्दस्सिर:8)

तो बेहोश हो कर गिरे जब आप को उठाया गया तो मय्यित पाए गए।

(एह्याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल ख़ौफ़ वर्रिजा, बयान अह़्वालिस्सह़ाबा...अलख़, जि.4, स.229)

बा'ज़ सलफ़ जब आग देखते या चराग़ जलाते तो जहन्नम को याद कर के सुब्ह तक रोते रहते ।

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا को पूछा गया कि ख़ाइफ़ीन कौन हैं ? फ़रमाया : जिन के दिल ब सबबे ख़ौफ़ एक फोड़ा सा बन गए हैं और उन की आंखें रोती हैं और वोह कहते हैं कि जब मौत हमारे पीछे हैं और क़ब्र हमारे आगे और क़ियामत हमारे लिये वा'दे की जगह और जहन्नम हमारे लिये रास्ता और अल्लाह तआ़ला के सामने खड़ा होना फिर हम कैसे ख़ुश हो सकते हैं । (एह्याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल ख़ौफ़ वर्रिजा, बयान अह़वालिस्सह़ाबा...अलख़, जि.4, स.227)

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक जानवर को देख कर फ़रमाया : **یا لیتنی مثلك یا طئر ولم اخلق بشراً**

काश मैं परिन्दा होता (तो अ़ज़ाब से मामून होता) और बशर न होता ।

(एह्याउल उ़लूमिद्दीन, किताबुल ख़ौफ़ वर्रिजा, बयान अह़वालिस्सह़ाबा...अलख़, जि.4, स.226)

ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते थे कि मैं दोस्त रखता हूं कि मैं दरख़्त होता जो काटा जाता । (किताबुज़्ज़ोहद, लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, ज़ोहद अबी ज़र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ, अल ह़दीस:788, स.169)

दोस्तो ! सलफ़ सालिह़ीन की त़रफ़ ख़याल करो वोह किस क़दर ख़ौफ़े इलाही रखते थे । अब तुम अपने ह़ालात पर ग़ौर करो । क्या तुम्हें कभी आयाते अ़ज़ाब सुन कर रोना आया है ? कभी ख़ौफ़े इलाही से ग़श हुवा है ? कभी कलामे इलाही सुन कर तुम्हारे बदन के रौंगटे खड़े हुए हैं ? अगर नहीं तो क़सावते क़ल्बी का इ़लाज करो और किसी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल की ग़ुलामी इख़्तियार कर के उस से अपने अम्राज़े बात़िनिय्या का इ़लाज करवाओ । **अल्लाह** तआ़ला अपने शिफ़ाख़ानए ह़क़ीक़ी से तुझे शिफ़ा इ़नायत करेगा और ज़रूर करेगा कि उस का वा'दा सच्चा है ।

म–दनी माह़ोल अपना लीजिए

(अज़् मजलिसे अल मदी–नतुल इ़ल्मिय्या)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

गुनाहों से बचने और नेक बनने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म–दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । إِنْ شَاءَ الله عَزَّوَجَلَّ म–दनी माह़ोल की ब–र–कत से आ'ला अख़्लाक़ी अवसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे । अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत और राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के **म–दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये । इन म–दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब–र–कत से अपने साबेक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आक़िबत के लिये बेचैन हो जाएगा । जिस के नतीजे में इर्तिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत मह़सूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी । आ़शिक़ाने रसूल के म–दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ो हूश कलामी और फ़ुजूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते कुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, गुसीला पन रुख़्सत हो जाएगा और इस की जगह नरमी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, बद गुमानी की आ़दते बद निकल जाएगी और हुस्ने ज़न की आ़दत बनेगी, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूट जाएगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी, अल ग़–रज़ बार बार राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म–दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा । إِنْ شَاءَ الله عَزَّوَجَلَّ

मैं फ़नकार था !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

आइये ! गुनाहों के दलदल में धंसे हुए एक ***फ़नकार*** का वाक़ेआ़ पढ़िये जिसे दा'वते इस्लामी के ***म-दनी माह़ोल*** ने म-दनी रंग चढ़ा दिया । चुनान्चे ***ओरंगी*** टाऊन (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : अफ़्सोस स़द करोड़ अफ़्सोस ! मैं एक ***फ़नकार*** था, म्यूज़ीकल प्रोग्राम्ज़ और फ़ंक्शन्ज़ करते हुए ज़िन्दगी के अनमोल अवक़ात बरबाद हुए जा रहे थे, क़ल्बो दिमाग़ पर ग़फ़्लत के कुछ ऐसे पर्दे पड़े हुए थे कि न नमाज़ की तौफ़ीक़ थी न ही गुनाहों का एह़सास । स़ह़राए मदीना टोल प्लाज़ा सुपर हाई वे बाबुल मदीना कराची में बाबुल इस्लाम सत़्ह़ पर होने वाले ***तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़*** (सिने 1424 हिजरी, सिने 2003 इस्वी) में हाज़िरी के लिये एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने ***इन्फ़िरादी कोशिश*** कर के तरग़ीब दिलाई । ज़ह़े नसीब ! उस में शिर्कत की सआ़दत मिल गई । तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर ***रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़*** में मुझे अपने गुनाहों पर बहुत ज़ियादा नदामत हुई, मैं अपने जज़्बात पर क़ाबू न पा सका, फूट फूट कर रोया, बस रोने ने काम दिखा दिया ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मुझे ***दा'वते इस्लामी*** का म-दनी माह़ोल मिल गया । और मैं ने रक़्सो सुरूद की मह़फ़िलों से ***तौबा*** कर ली और ***म-दनी क़ाफ़िलों*** में सफ़र को अपना मा'मूल बना लिया ।

25 दिसम्बर सिने 2004 इस्वी को मैं जब ***म-दनी क़ाफ़िले*** में सफ़र पर रवाना हो रहा था कि छोटी हमशीरा का फ़ोन आया, भर्राई हुई आवाज़ में उन्हों ने अपने यहां होने वाली ***नाबीना बच्ची*** की विलादत की ख़बर सुनाई और साथ ही कहा, डॉक्टरों ने कह दिया है कि इस की आंखें रौशन नहीं हो सकतीं । इतना कहने के बा'द

बन्द टूटा और छोटी बहन सदमे से बिलक बिलक कर रोने लगी। मैं ने येह कह कर ढारस बंधाई कि اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ***म-दनी क़ाफ़िले*** में दुआ करूंगा। मैं ने म-दनी क़ाफ़िले में ख़ुद भी बहुत दुआएं कीं और म-दनी क़ाफ़िले वाले ***आशिक़ाने रसूल*** से भी दुआएं करवाईं। जब म-दनी क़ाफ़िले से पलटा तो दूसरे ही दिन छोटी बहन का मुस्कराता हुवा फ़ोन आया और उन्हों ने ख़ुशी ख़ुशी येह ख़बरे फ़रह़त असर सुनाई कि اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ***मेरी नाबीना बेटी महक की आंखें रौशन हो गई हैं और डॉक्टर्ज़ तअ़ज्जुब कर रहे हैं कि येह कैसे हो गया ! क्यूं कि हमारी डॉक्टरी में इस का कोई इलाज ही नहीं था।*** येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे बाबुल मदीना कराची में अ़लाक़ाई मुशा-वरत के एक रुक्न की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये कोशिशें करने की सआ़दतें ह़ासिल हैं।

आफ़तों से न डर, रख करम पर नज़र
रौशन आंखें मिलें, क़ाफ़िले में चलो
आप को डॉक्टर, ने गो मायूस कर
भी दिया मत डरें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल कितना प्यारा प्यारा है। इस के दामन में आकर मुआ़शरे के न जाने कितने ही बिगडे हुए अफ़राद बा-किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों की बहारें भी आप के सामने हैं। जिस त़रह़ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से बा'ज़ो की दुन्यवी मुसीबत रूख़्सत हो जाती है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ ताजदारे

रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत,सरापा रह़मत,शफीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से आख़िरत की आफ़त भी राह़त में ढल जाएगी ।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खूल जाएगी ताक़त रसूलुल्लाह की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने रमज़ान,जि.1,स.851)

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इ़बादात व अख़्लाक़िय्यात के तअ़ल्लुक़ से अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63** त़-लबा इ़ल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83** और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये **40 म-दनी इन्आ़मात** सुवालात की सूरत में मुरत्तब किये हैं । इन **म-दनी इन्आ़मात** को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह मे हाइ़ल रुकावटे अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दुर हो जाती है और उसकी ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने गुनाहो से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा । हम सब को चाहिये कि बा किरदार मुसलमान बनने के लिये म-क-तबतुल मदीना की किसी भी शाख़ से म-दनी इन्आ़मात का कार्ड़ ह़ासील करे और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुह़ासिबा)करते हुए कार्ड पुर करे और हर म-दनी या'नी क़मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अंदर-अंदर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मादार को जमा' करवाने का मा'मुल बना ले ।

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म

एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा़ है: اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे ***म-दनी इन्आ़मात*** से प्यार है और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना**

करने का मेरा मा'मूल है। एक बार मैं तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, ***दा'वते इस्लामी*** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में ***आ़शिक़ाने रसूल*** के साथ सूबए बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं कि रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, ***जनाबे रिसालत मआब*** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम था कि लबहाए मु-बारका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए: "जो म-दनी क़ाफ़िले में **रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा।**"

शुक्रिया क्यूं कर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
कि पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब फ़ैज़ाने र-मज़ान, फ़ैज़ाने लैलतुल क़द्र, जि.**1**, स.**931**)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर करने और हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। या अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ उम्मते मह़बूब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

माख़ज़ व मराजेअ़

नम्बर शुमार	किताब	मत़्बूआ
1	सह़ीह़ मुस्लिम	दार इब्ने ह़ज़्म बैरूत
2	सुननुत्तिरमिज़ी	दारुल फ़िक्र बैरूत
3	सुनन अबी दावूद	दार इह़याउत्तरासिल अ़रबी बैरूत
4	मिश्कातुल मसाबीह़	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिया बैरूत
5	अल मुस्तदरक लिल हा़किम	दारुल मा'रफा बैरूत
6	किताबुज़्ज़ुहद लिल इमाम अह़मद बिन ह़म्बल	दारुल ग़द्दिल जदीद
7	अद्दुर्रुल मुख़्तार	दारुल मा'रफा बैरूत
8	तफ़्सीरे इब्ने कसीर	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिया बैरूत
9	तफ़्सीरे कबीर	दार इह़याउत्तरासिल अ़रबी बैरूत
10	तज़किरतुल औलिया	इन्तिशाराते गंन्जीना तेहरान
11	इह़या–उल–उ़लूमुद्दीन	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिया बैरूत
12	तम्बीहुल मुग़तरीन	दारुल बशाइर
13	नुज़हतुन्नाज़िरीन लिश्शैख़ तक़ियुद्दीन	कोइटा
14	वफ़ीयातुल आ'यान	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिया बैरूत
15	अर्रिसालतुल कुशैरिय्या	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिया बैरूत
16	किमियाए सआ़दत	इन्तिशाराते गंन्जीना तेहरान
17	शो'बुल ईमान	दारुल कुतुबिल इ़ल्मिया बैरूत

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेशकर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

(1) करन्सी नोट के मसाइल (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिमि फ़ी ह़कामि क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूततुल वासित़ा) (कुल सफ़ह़ात:60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात:74)

(4) मुआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तश्रीह़ तदबीरे इस्लाह़ व नजात व इस्लाह़ (कुल सफ़ह़ात:41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़रफ़ाए बि एअ़ज़ाज़े शरए़ वल उ़लमाए) (कुल सफ़ह़ात:57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ु इस्बाते हिलाल) (कुल सफ़ह़ात:63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारुल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात:100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा? (विशाहुल जीद फी तहलीलि मुआ–न–कतिल ईद) (कुल सफहात: 55)

(9) राहे खुदा में खर्च करने के फजाइल (रद्दुल कह्ति वल वबा–इ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु–कराअ) (कुल सफहात: 40)

(10) वालिदैन, जौजैन और असातिजा के हुकूक (अल हुकूक लि तर्हिल उकूक) (कुल सफहात:125)

(11) दुआ के फजाइल (अह्सनुल विआ–इ लि आदाबिद्दुआ मअहू जैलुल मुद्दआ लि अह्सनुल विआअ) (कुल सफहात:140)

शाएअ होने वाली अ–रबी कुतुब

अज इमामे सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अहमद रजा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ्लुल फकीहिल फाहिम (सफहात: 74)

(13) तम्हीदुल ईमान. (कुल सफहात: 77)

(14) अल इजाजातुल मय्यिनह (कुल सफहात: 62)

(15) इका–मतुल कियामह (कुल सफहात:60)

(16) अल फदलुल मव्हबी (कुल सफहात:46)

(17) अजलल इ'लाम (कुल सफहात: 70)

(18) अज्जम–ज–मतुल क–मरिय्य (कुल सफहात:93)

(19, 20)जद्दुल मम्तारे अ़ला रद्दिल मुह्तार (अल मुजल्लिद अल अव्वल वस्सानी) (कुल सफ़ह़ात: 570,672)

(शो'बए इस्लाही कुतुब)

(21) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ	(कुल सफ़हात:160)
(22) इन्फ़िरादी कोशिश	(कुल सफ़हात:200)
(23) तंगदस्ती के अस्बाब	(कुल सफ़हात:33)
(24) फ़िक्रे मदीना	(कुल सफ़हात:164)
(25) इम्तिहान की तैयारी कैसे करें	(कुल सफ़हात:32)
(26) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल	(कुल सफ़हात:43)
(27) जन्नत की दो चाबियां	(कुल सफ़हात:152)
(28) कामियाब उस्ताज़ कौन ?	(कुल सफ़हात:43)
(29) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला	(कुल सफ़हात:196)
(30) कामियाब त़ालिबे इल्म कौन ?	(कुल सफ़हात: तक़रीबन 63)
(31) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम	(कुल सफ़हात:325)
(32) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी	(कुल सफ़हात:96)
(33) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़	(कुल सफ़हात:50)
(34) तह़क़ीक़ात	(कुल सफ़हात:142)
(35) अरबईन ह़नफ़िय्या	(कुल सफ़हात:112)
(36) अ़त्तारी जिन का ग़ुस्ले मय्यित	(कुल सफ़हात:24)
(37) त़लाक़ के आसान मसाइल	(कुल सफ़हात:30)
(38) तौबा की रिवायात व ह़िकायात	(कुल सफ़हात:124)
(39) क़ब्र खुल गई	(कुल सफ़हात:48)
(40) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से	(कुल सफ़हात:275)
(41) टीवी और मूवी	(कुल सफ़हात:32)
(42 ता 48) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)	
(49) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल	(कुल सफ़हात:24)
(50) ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़ालात	(कुल सफ़हात:106)
(51) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत	(कुल सफ़हात:100)
(52) रहनुमाए जद्वल बराए म-दनी क़ाफ़िलात	(कुल सफ़हात:255)
(53) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमा	(कुल सफ़हात:24)
(54) म-दनी कामों की तक़्सीम	(कुल सफ़हात:68)
(55) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें	(कुल सफ़हात:220)
(56) तरबिय्यते औलाद	(कुल सफ़हात:187)
(57) आयाते कुरआनी के अन्वार	(कुल सफ़हात:62)

(58) अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात:66)

(59) फैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़ह़ात:120)

(60) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात:57)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

(61) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुतजरुर्रबिह़ फ़ी सवाबिल अ़मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात:743)

(62) शाहराह औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन (कुल सफ़ह़ात:36)

(63) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़ह़ात:74)

(64) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मुतअ़ल्लिम त़रीक़त्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात:102)

(65) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद) (कुल सफ़ह़ात:64)

(66) अद दा'वत इलल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात:148)

(शो'बए दर्सी कुतुब)

(67) ता'रीफ़ाते नह़विय्या (कुल सफ़ह़ात:45)

(68) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात:64)

(69) नुज़्हतुन्नज़र शरहे नुख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात:175)

(70) अरबईने नवविय्या (कुल सफ़ह़ात:121)

(71) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात:79)

(72) गुलदस्ता अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात:180)

(73) वक़ायतुन्नह़व फ़ी शरहे हिदायतुन्नह़व

(शो'बए तख़्रीज)

(74) अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़ह़ात:422)

(75) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात:679)

(76 ता 81) बहारे शरीअ़त (पांच ह़िस्से)

(82) इस्लामी ज़िन्दगी कुल सफ़ह़ात:108)

(84) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का इ़श्के़ रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात:274)

(85) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात:59)

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा

फ़ेहरीस

नंबर शुमार	उ़न्वान	सफ़हा
1	कुछ मुसन्निफ़ के बारे में	8
2	पहली नज़र	10
3	इत्तिबाए क़ुरआनो सुन्नत	13
4	इख़्लास	20
5	الحب فی اللّٰہ والبغض فی اللّٰہ	33
6	ईसार अ़लन्नफ़्स	37
7	तर्के निफ़ाक़	40
8	हुक्काम के ज़ुल्म पर सब्र करना	43
9	क़िल्लते ज़ह़क	48
10	कसरते ख़ौफ़	53
11	हुक़ूक़ुल इ़बाद से डरना	59
13	क़ियामत का डर	64
14	म-दनी माह़ोल अपना लीजिए	70